

VASVASE AUR UNKA ILAJ (GUJARATI)

મુસ્લીમ શુદ્ધ



# વસ્વાસે ઓર ઉન કા ઇલાજ



શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુલ્તન ડાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી હાફ્ત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ  
મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અત્તાર કાદિરી રાવી

مكتبة المدينة  
(مكة المكرمة)

મ-દની એનલ

દેખતે રહિયે



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 آمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## કિતાબ પઢવે કી દુઆ

અઝ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નાત, બાનિયે  
 દા'વતો ઈસ્લામી, હઝરતો અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ  
 મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અઘાર કાદિરી ૨-ઝવી. دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

દીની કિતાબ યા ઈસ્લામી સબક પઢને સે પહલે ઝૈલ મેં દી  
 હુઈ દુઆ પઢ લીજિયે إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ જો કુછ પઢેંગે યાદ રહેગા. દુઆ  
 યેહ હૈ :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
 عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

તરજમા: ઐ અલ્લાહ ેઝ્ઝલ્ હમ પર ઈલ્મો હિક્મત કે દરવાઝે ખોલ દે ઔર  
 હમ પર અપની રહમત નાઝિલ ફરમા ! ઐ અ-ઝમત ઔર બુઝુર્ગી વાલે.

(المستطرف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

નોટ : અવ્વલ આબિર એક એક બાર દુરુદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબ ગમે મદીના

વ બકીઅ

વ મગિરત



13, શવ્વાલુલ મુકર્રમ સિ. 1428 હિ.

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 مَا بَعُدَ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## “વસ્વસે ઔર ઉન કા ઈલાજ”

યેહ રિસાલા (વસ્વસે ઔર ઉન કા ઈલાજ)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ૨-ઝવી رحمته الله عليه ને ઉર્દૂ ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હૈ.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ કિયા હૈ ઔર મક-ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા હૈ. ઈસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએં તો મજલિસે તરાજિમ કો (બ ઝરીઅએ મક્તૂબ યા ઈ-મેઈલ ) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાબિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી)

મક-ત-બતુલ મદીના

સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને, તીન દરવાઝા,

અહમદ આબાદ-1, ગુજરાત, ઈન્ડિયા

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## वस्वसे और उन का इलाज

शैतान लाभ सुस्ती दिलाये ये ह रिसावा (60 सफ़हात) आभिर तक पढ  
लीजिये. إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ. वस्वसों की हलाकत भैजियों से अमान मिलेगी.

### दुआये कुनूत के बा'द दुरुद शरीफ़ पढना बेहतर

उठरते सय्यिदुना अबू हलीमा मुआज رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ  
(दुआये) “कुनूत” में सरकारे आली वकार, मदीने के  
ता. ४६१२ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरुदे पाक पढते थे.  
(فَضَّلُ الصَّلَاةَ عَلَى النَّبِيِّ لِلْقَاضِي الْجَهْمِيِّ ص ८७ رقم ८९) दा'वते इस्लामी के  
इशाअती इदारे मक-त-भतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़हात  
पर मुशतमिल किताब, “अदारे शरीअत” जिल्द अक्वल सफ़हा  
655 पर सदरुशशरीअह, अदरुत्तरीकह उठरते अल्लामा मौलाना  
मुइती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी فَرَمَاتِهِ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं :  
(नमाजे वित्र की तीसरी रक्अत में) दुआये कुनूत के बा'द दुरुद  
शरीफ़ पढना बेहतर है.

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

### वस्वसे के लइमी मा'ना

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! “वस्वसा” के लु-गवी मा'ना  
हैं : “धीमी आवाज” शरीअत में बुरे भयावात और इंसिद किंक

**कुरआने मुश्किल** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुर्रदे पाक पढा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसी पर दस रहमतें भेजता है. (ط)

(या'नी बुरी सोच) को वस्वसा कहते हैं. (اشعج ص ३००) तर्ज़ीरे भ-गवी में है : वस्वसा उस बात को कहते हैं जो शैतान ईन्सान के दिल में डालता है. (تفسير بغوی ج २, ६ ص १८, १९) आम तौर पर “वस्वसे” हर एक को आते हैं, किसी को कम किसी को ज़ियादा. भा'ज लोग बहुत ज़ियादा हस्सास होने के सबब “वस्वसों” के मु-तअत्लिक सोच सोच कर उन्हें अपने ऊपर मुसल्लत कर लेते और फिर भुद ही तकलीफ़ में आ जाते हैं ! अगर “वस्वसों” पर गौर न किया जाये तो उमूमन येह भुद ही भत्म हो जाते हैं. जूँ ही वस्वसे आने शुरुअ हों “जिक्कुल्लाह” म-सलन “अल्लाह अल्लाह” करना शुरुअ कर दीजिये اِنَّ شَآءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ शैतान फिरार हो जायेगा. मुसल्मान जिस कदर रब्बुल आ-लमीन عَزَّوَجَلَّ की ईताअत में आगे बढता है, उसी कदर शैतान की मुभा-लइत व अदावत भी बढ जाती है और वोह हमा अकसाम (या'नी तरह तरह) के मक़ो इरेब (और धोके) के जाल बिछाता चला जाता है और उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ईबादत और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नत से रोकने की भी भरपूर कोशिश करता है और तरह तरह के वस्वसे दिला कर, गन्दे भयालात जेहन्न में ला कर परेशान करता रहता है, यहां तक के बसा अवकात जहालत की बिना पर आदमी ईस के ईन वस्वसों का शिकार हो कर नेकी और भलाई के काम से रुक जाता है और यूँ शैतान अपने मक़सद में काम्याब हो जाता है. **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने मज्हद पारह 18 सू-रतुल मुअमिनून आयत नम्बर 97

इरमाने मुस्तफ़ा (صلى الله تعالى عليه و آله وسلم) : जो शपस मुज़ पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोड जन्त का रास्ता भूल गया. (طريق)

और 98 में अपने प्यारे मडभूब (صلى الله تعالى عليه و آله وسلم) से ईशाद इरमाया :

وَقُلْ رَبِّ اَعُوذُ بِكَ مِنْ

तर-ज-मअे कन्तुल इमान : और तुम

هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ ۝۹۸ وَاَعُوذُ

अर्ज करो के अै मेरे रब ! तेरी पनाड

शयातीन के वस्वसों से और अै मेरे रब !

بِكَ رَبِّ اَنْ يُّحْضِرُوْنِ ۝۹۹

तेरी पनाड के वोड मेरे पास आओं.

न वस्वसे आओं न कभी गन्टे भयालात

डो जेहन का और दिल का अता कुइले मदीना

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

हर अेक के साथ अेक इरिशता और अेक शैतान होता है

दा'वते इस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-भतुल मदीना की

मत्बूआ 344 सइहात पर मुश्तमिल किताब, "मिन्हाजुल

आबिदीन" सइहा 79 ता 80 पर तडरीर कर्दा डुज्जतुल इस्लाम

डजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली

ईरान के इलासा है : **اَللّٰهُمَّ** ने हर

ईन्सान के दिल पर अेक इरिशता मुकरर इरमाया है जो उसे नेकी की

दा'वत देता है, उस इरिशते को मुल्हिम और उस की दा'वत को

ईल्डाम कडते हैं. ईस के मुकाबले में **اَللّٰهُمَّ** की तरफ से अेक शैतान

मुसल्लत कर दिया गया है, जो बुराई की दा'वत देता है, ईस शैतान

को वस्वास और ईस की दा'वत को वस्वसा कडते हैं. सय्यिदुना इमाम

मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली **اَللّٰهُمَّ** मजीद

इरमाते हैं : "अगर्ये अकसर उ-लमाअे किराम **اَللّٰهُمَّ** की येड

**इरमाने मुसल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिसके पास मेरा जिक्र हुआ और उसने मुझे पर दुरुददे पाक  
न पढा तलक़ीक़ वोह बद्द भुप्त हो गया. (उरुदू)

राय है कि फिरिशता ईन्सान को नेकियों की तरफ़ बुलाता है और शैतान  
सिर्फ़ बुराईयों की तरफ़." लेकिन मेरे शैख़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरमाया  
है के शैतान बसा अवकात ब आहिर नेकी की दा'वत दे कर भी बुराई  
की तरफ़ लगा देता है और वोह ईस तरह के बडी नेकी के बजाये छोटी  
नेकी की तरफ़ बुलाता है, जिससे अेक बडे गुनाह करने का नुकसान  
नेकी के सवाब से जियादा हो. जैसे उजब (या'नी फ़ुद पसन्दी) वगैरा.

सरवरे दीं लीजे अपने ना तुवानों की बबर

नइसो शैतां सय्यिदा कब तक दबाते जायेंगे (उदाईके बश्शिश शरीक)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

हमआद किसे कहते हैं

मिरकात और अशि'अतुल्लम्बात में है के जूँ डी किसी ईन्सान  
का बय्या पैदा होता है, उसी वक्त ईब्लिस के यहाँ भी बय्या पैदा  
होता है जिसे इरसी में उमआद और अ-रबी में वस्वास कहते हैं.

(اشعة اللمعات ج ١ ص ٨٧، مرقاة ج ١ ص ٢٤٤، مرقاة ج ١ ص ٨٣)

**आका का हमआद मुसलमान हो गया**

उजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसउिद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से  
रिवायत है के म-दनी ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद इरमाया  
के तुम में अैसा कोई नही जिस पर अेक साथी जिन्न (शैतान) और  
अेक साथी फिरिशता मुकर्रर न हो. लोगों ने दरयाइत किया : या  
रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ क्या आप पर भी ? ईशाद इरमाया :  
मुज पर भी, लेकिन अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे उस पर मद्द दी जिससे

**इरमाबे मुश्क** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस भरतबा सुंभ और दस भरतबा शाम दुरुदे पाक पढा उसे क्रियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी. (दा.शु.१)

वोह शैतान मुसल्मान हो गया, अब वोह मुझे तलाह का ही मशवरा देता है. (صحيح مسلم ص 1012 حديث 2814)

## सब के साथ ओक शैतान होता है

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो! येह जेहून में रहके के सिर्फ सरकारे

मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का उमजाद ही मुसल्मान हुवा, बाकी सभी के “उमजाद” पकड़े काफिर हैं. जहर डाल उम पर ओक औसा शैतान मुसल्लत है जो के कदर काफिर है और उमें वस्वसे दिलाता और हर वक्त उमारी मुष्पा-लइत व अदावत में लगा रहता है.

मुझे नफसे जालिम पे कर दीजे गालिब

हो नाकाम उमजाद या गौसे आ'उम

(वसाईले बज्शिश, स. 297)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

## शैतान फारिग है तू मशगूल

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 344 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब (मुतर्जम) “मिन्हाजुल आभिदीन” सफ़हा 77 पर हुजुजतुल इस्लाम उजरते सय्यिहुना عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली उजरते सय्यिहुना يَهْدِيَا بِنِ مُؤَاظِ رَاكِي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي का येह कौल नकल करते हुअे इरमाते हैं: “शैतान फारिग है और तू मशगूल, वोह तुजे देभता है मगर तू उसे नहीं देभता, तूने उसे लुलाया हुवा है मगर उस ने तुजे नहीं लुलाया और तेरे अन्दर भी शैतान के कइ



**इरमाने मुश्किल** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दुष्ट शरीफ़ न पड़ा उस ने जका की. (एबुजुयैफ़)

यार व महदगार (म-सलन नफ़स और ज्वाहिशत वगैरा मौजूद) हैं, इस लिये उस से मुहा-रबा (या'नी लडाई) कर के उस को मज्लूब करना जरूरी है, वरना तू उस की शरारतों और उदाकतों से महझूज नही रह सकता.”

(مُنْهَاجُ الْعَابِدِينَ (عربي) ص 61)

कलेजा शयाती का थरा उठेगा

पुकारो सभी मिल के या गौसे आ'जम

(वसाधले बफ़िश, स. 296)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

**शैतान बदन में भून की तरह गर्दिश करता है**

शैतान हम से इस कदर करीब है के गैबदान आका

क़रमाने आलीशान है : “बेशक शैतान इन्सान (के बदन) में भून की तरह गर्दिश करता है.” (بخاری ج 1 ص 169 حديث 2038)

सूझियामे किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَامُ इरमाते हैं : पस उस के रास्तों को लूक के जरीमे तंग करो.

(كشْفُ الْخَفَاءِ ج 1 ص 198)

**जियादा जाने के 6 तशवीश नाक गुक्सानात**

जो उट कर जाते हैं वोह गौर इरमा लें के शैतान से किस तरह पीछा छूटेगा ! हुज्जतुल इस्लाम हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इरमाते हैं : मन्कूल है, जियादा जाने में छ<sup>6</sup> बुराईयां हैं : **1** दिल से पौके जुदा यदा जाता है **2** मज्लूके जुदा पर रहमत का जजबा या'नी हमदर्दी दिल से निकल जाती है क्यूंके औसा शफ़्स येह समजता है के

**करमाले मुखदा** : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुँह पर रोज़े जुमुआ दुइद शरीफ़ पढेगा मे कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करेगा. (अबुअल)

मेरी तरह सभी पेट भरे हुअे हैं ﴿3﴾ धबाहत भारी पड जाती है  
 ﴿4﴾ वा'ज व नसीहत (सुन्नतों भरा बयान) सुन कर दिल में नरमी  
 पैदा नहीं होती ﴿5﴾ अगर भुद भुबद्लिग है और बयान और  
 हिकमत की बात करता है तो लोगों के दिलों पर धस का असर नहीं  
 पडता ﴿6﴾ तरह तरह की भीमारियां जनम लेती हैं.

(مَلَخَّصَ از اِحْيَاءُ الْعُلُومِ ج ۳ ص ۶۰)

या धवाही भूक की दौलत से मालामाल कर

दो जहां में अपनी रहमत से मुझे भुशडाल कर

(भूक के इवाधे और जियादा जाने के नुक्सानात की तइसीवी मा'लूमात  
 के लिये ईजाने सुन्नत जिल्द अक्वल के बाब "पेट का कुइले मदीना" का  
 मुता-लआ इरमाधये)

अल्लाह ने जब शैतान को मरदूद करार दिया तो उस  
 ने धन्सान से दुश्मनी का अेलान कर दिया ! उस का कौल कुरआने  
 मज्जद पारह 8 सू-रतुल आ'राइ आयत नम्बर 16 और 17 में धस  
 तरह नकल किया गया है :

قَالَ فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ

صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ ثُمَّ لَأَأْتِيَنَّهُمْ

مِّنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ

أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ ۖ وَلَا تَجِدُ

أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ۝

तर-ज-मअे कन्जुल धमान : (शैतान)

भोला : तो कसम धस की के तूने मुझे

गुमराह किया मैं जइर तेरे सीधे रास्ते

पर धन की ताक में भैठूंगा, फिर जइर

मैं धन के पास आउंगे धन के आगे

और पीछे और दाहने और बाअें से.

और तू धन में अकसर को शुक गुजार

न पाअेगा.

**इरमाने मुखडा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (अबुल)

महबूबे जुदा सर पे अजल आ के पडी है

शैतान से अतार का इमान बया लो

(वसाईले बफ्शिश, स. 86)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

**वस्वसों के जुदा जुदा अन्दाज**

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! शैतान तो उन की दुश्मनी से भी भाज नहीं आता जो के इस के साथ अदावत नहीं रखते और इस की मुभा-लफ्त भी नहीं करते बल्के इस के पक्के दोस्त हैं और इस मरदूद की इताअत करते हैं, जैसा के कुर्फार, गुमराह और इंसिक व इजिर लोग, तो जब येह अपने “दोस्तों” को भी नहीं छोडता और उन्हें भी बराबर वस्वसे डाले जाता और तबाही व हलाकत में ढीट से ढीट तर बनाये यला जाता है, तो फिर उन उ-लमाअे दीन और सुन्नतों के **मुबद्लिगीन** كَثَرَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن (या’नी अद्लाह एउुजल औसों की कसरत करे) के साथ उस की अदावत का क्या हाल होगा जो के हर वक्त उस की मुभा-लफ्त करते, मुसल्मानों को इस के दाव पेय से बा षबर रखते और यूं उस को गजब नाक करने (या’नी गुस्सा दिल्वाने) और उस के गुमराह कुन मन्सूबों को जाक में मिलाने में मसइफ रहते हैं. अस इस के वस्वसों से **अद्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते रहना याहिये क्यूंके येह मरदूद शैतान बहुत जियादा मक्कार व यालाक है हर अक को उस की नफ्सिय्यात के मुताबिक वस्वसों का शिकार बनाता है जैसा के **मुइस्सिरे** शहीर **उकीमुल उम्मत** हजरते मुइती अहमद यार पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان इरमाते हैं : जयाल रहे के

इरमाणे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुझे पर दुरुद पढ़ो के तुम्हारा दुरुद मुझे तक पहुंचाया है. (طرائق)

शैतान आदिमों के दिल में आदिमाना वस्वसे और सूझियों के दिल में आशिकाना वस्वसे, अवाम के दिल में आमियाना वस्वसे डालता है. (या'नी) “जैसा शिकार वैसा जाल!” बहुत दृढ़ता (गुनाहों को) ऐसा सज कर पेश करता है के) ईन्सान गुनाह को ईबादत समझ लेता है! (मिरआत, जि. 1, स. 87) भा'ज अवकात शैतान अपने आप को “भुदा” कह कर भी सामने आ जाता है और गुमराह करने की कोशिश करता है, जैसा के हमारे पीरो मुर्शिद शह-शाहे बगदाद डुजुरे गौसे आ'जम सय्यिदुना शैब अब्दुल कादिर जलानी قَدَسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِيُّ के पास आया था.

सुन लो शैतां ने हर तरफ़ हर सू

भूख झेला के जाल रब्बा है

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

अल्लाह के बारे में वस्वसे

उमारे ध्यारे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

का इरमाने डिफ़ाजत निशान है : तुम में से किसी के पास शैतान आता है तो उस से कहता है के कुलां यीज किस ने पैदा की ? कुलां किस ने ? यहां तक के कहता है के तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ को किस ने पैदा किया ? जब ईस हद तक पहुंचे तो “أَعُوذُ بِاللَّهِ” पढ लो और ईस से भाज रहो.

(بخاری ج ۲ ص ۳۹۹ حدیث ۳۱۷۶)

**हर सुवाल का जवाब नहीं दिया जाता**

मुझसिरे शहीर डकीमुल उम्मत हजरते मुझती अहमद यार

**इरमाते मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर इस मरतबा दुरुदे पाक पढा **اَعُوذُ بِاللّٰهِ** (उस पर सो रउमते नाज़िल करमाता है. (طبرانی))

भान **اِنَّا لِلّٰهِ اِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُونَ** एस हदीसे पाक के तहत इरमाते हैं : या'नी एस का जवाब सोयने की कोशिश भी मत करो, वरना शैतान सुवाल दर सुवाल करेगा. "أَعُوذُ بِاللّٰهِ" पढ कर उसे भगा दो, हर सुवाल का जवाब नहीं दिया जाता. रब (عَزَّوَجَلَّ) ने शैतान के सज्दा न करने पर उस के दलाएल का जवाब न दिया. बढके इरमाया : **فَاخْرُجْ مِنْهَا** (या'नी तू जन्नत से निकल जा. (پ ۱۴، العنكبوت ۳۴)) भयाल रडे के **أَعُوذُ بِاللّٰهِ** (من الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ) पढना) दइअे शैतान के लिये एकसीर है.

(भिरआत, जि. अक्वल, स. 82)

नइसो शैतां की शरारत दूर हो

येह करम या मुस्तफ़ा इरमाएये (वसाएले भग्निश, स. 87)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

**वस्वसे का कुरआनी धलाज**

भीठे भीठे इस्लामी भाएयो ! मा'लूम हुवा जब भी वस्वसा आये "أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ" पढ कर उस को दइअ करना याहिये. वस्वसे आने की सूरत में कुरआने पाक में भी **اَعُوذُ بِاللّٰهِ** की पनाह मांगने का हुकम दिया गया है युनान्ये पारह 9 सू-रतुल आ'राइ आयत नम्बर 200 में एशाद ह्योता है :

وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ

فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ إِنَّهُ سَيَكْفِيْكَ عَلَيْهِمْ ۝

तर-ज-मये कन्जुल एमान : और ये

सुनने वाले ! अगर शैतान तुजे कोए

कूंया (वस्वसा) दे तो अद्लाह

(عَزَّوَجَلَّ) की पनाह मांग, बेशक वोडी

सुनता ज़ानता है.

**इरमांन मुरवका** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरद शरीफ न पढे तो वोह लोगों में से कजूस तरीन शप्स है. (अहमदिया)

मुज को टे टे पनाड शैतां से

ईस से ईमां मेरा बया या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ  
**ईमाम राजी और शैतान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की

मत्बूआ 502 सईहात पर मुशतमिल किताब, "मल्कूआते आ'ला  
 उजरते (मुभर्रजा)" सईहा 493 ता 494 पर है : (उजरते सय्यिदुना)

ईमाम इब्नुदीन राजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى के नज़्अ का वक्त जब करीब

आया, शैतान आया, उस वक्त शैतान पूरी जानतोड कोशिश करता

है के किसी तरह ईस (अन्दे) का ईमान सलब हो जाये. (या'नी छीन

लिया जाये के) अगर ईस वक्त (वोह अन्दा ईमान से) फिर गया तो

फिर कभी न लौटेगा. (युनान्ये) उस (या'नी शैतान) ने उन से पूछा

के तुम ने तमाम उम्र मुना-जरों, मुबा-हसों में गुजारी, षुदा (عَزَّ وَجَلَّ)

को भी पछयाना ? आप (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى) ने इरमाया : "बेशक षुदा

(عَزَّ وَجَلَّ) अेक है." उस (या'नी शैतान) ने कहा : ईस पर क्या दलील ?

आप (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى) ने अेक दलील काईम इरमाई. वोह (या'नी

शैतान) षबीस मुअद्लिमुल म-लकूत (या'नी इरिश्तों को ता'लीम देने

वाला. उस्ताद) रह चुका है, उस ने वोह दलील तोड दी. उन्हों ने दूसरी

दलील काईम की, उस ने वोह भी तोड दी. यहां तक के तीन सो

साह<sup>360</sup> दलीलें उजरते (सय्यिदुना ईमाम इब्नुदीन राजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي)

ने काईम कीं और उस ने सब तोड दीं. अब येह (या'नी ईमाम

**इरमाने मुश्किल** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक भाक आवूँ छो जिस के पास मेरा जिंक छे और वोड मुअ पर दूडे पाक न पडे. (रु)

साहिब (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) सप्त परेशानी में और निहायत मायूस. आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) के पीर साहिब छतरते (सय्यिदुना शैभ) नजमुदीन कुब्रा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ कहीं दूर दराज मकाम पर वुजू इरमा रहे थे, वहां से आप (या'नी पीरो मुर्शिद) ने (इमाम राजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي को) आवाज दी : “कह क्यूं नहीं देता के मैं ने जुदा (عَزَّ وَجَلَّ) को बे दलील अक माना.”

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! देखा आप ने शैतान किस किस अन्दाज पर वार करता है ! अगर उस की बात पर ध्यान दे दिया जाये तो फिर येह पीछे ही पड जाता है. इस को NO LIFT करना, इस के “वस्वसों” की तरफ तवज्जोह न करना भी वस्वसों का इलाज है नीज **اَللّٰهُمَّ** سے हर हम शैतान की शरारतों से पनाह मांगते रहना याहिये और येह भी मा'लूम हुवा के किसी कामिल पीर का मुरीद बन जाना याहिये के मुर्शिद की तवज्जोह भी वस्वसअे शैतानी को दफ्अ करती है.

है अतार को सल्ले इमां का धडका

बया इस का इमां बया गौसे आ'जम (वसाइले भग्निश, स. 296)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

**तकदीर के बारे में वस्वसे**

शैतान तकदीर के मुआ-मलात में भी दिल में वस्वसे डालता रहता है, म-सलन जो कुछ तकदीर में लिखा है हम उस के पाबन्द हैं, तकदीर के आगे मजबूरे मद्दज हैं, हम तो वोही कर रहे हैं जो तकदीर में लिखा है, फिर कब्र व जहन्नम की सजाअें क्यूं ? वगैरा

**इस्लामाने मुश्कल** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस न मुज पर राजे जुमुआ दो सो बार दुरद पाक पढा उस  
 के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अमल)

वगैरा. यकीनन येह भी शैतान का धोका है, इस मुआ-मले में सोयें भी  
 नहीं, वरना शैतान गुमराह कर देगा, अस “أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ”  
 पढ कर इस मरदूद को भगा दीजिये.

## जो जैसा करने वाला था वैसा लिप दिया गया

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! याद रभिये ! जो जैसा करने  
 वाला था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे अपने इल्म से जाना और उस के  
 लिये वैसा लिखा, उस عَزَّوَجَلَّ के जानने और लिखने ने किसी को  
 मजबूर नहीं किया. इस बात को इस आम इल्म मिसाल से समझने  
 की कोशिश इरमाईये जैसा के आजकल कानून के मुताबिक गिजाओं  
 और दवाओं वगैरा के पैकेटों पर इन्तिहाई तारीख (EXP. DATE)  
 लिपी जाती है, बय्या भी येह बात समझ सकता है के कम्पनी वालों को  
 यूंके तजरिबा होता है के येह चीज कुलां तारीख तक भराब हो जायेगी,  
 इस लिये लिप देते हैं, यकीनन कम्पनी के (EXP. DATE) लिखने ने  
 उस चीज को भराब होने पर मजबूर नहीं किया, अगर वोह न  
 लिखते तब भी उस चीज को अपनी मुदत पर भराब होना ही था.

## तकदीर के बारे में अेक अहम इतवा

इस ज़िम्न में दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-अतुल  
 मदीना की मत्बूआ 692 सङ्घात पर मुश्तमिल किताब, “कुइय्या  
 कलिमात के बारे में सुवाल जवाब” सङ्घा 583 ता 585 पर लिखा  
 है : इतावा र-जविय्या जिल्द 29 सङ्घा 284 ता 285 से अेक सुवाल  
 जवाब पेश किया जाता है. सुवाल : “जैद” कहता है जो हुवा और  
 होगी सब ખુदा के हुकम से ही हुवा और होगी फिर बन्दे की क्यूं



ફરમાને મુસ્વાહા : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : મુઝ પર દુરુદ શરીફ પઢો અલ્લાહ (عَزَّ وَجَلَّ) તુમ પર રહમત ભેજેગા. (ابن ماجه)

ગરિફત હૈ ઔર ઈસ કો ક્યૂં સજા કા મુર-તકિબ ઠહરાયા ગયા ? ઈસ ને કૌન સા કામ ઐસા ક્રિયા જો મુસ્તહિક અઝાબ કા હુવા ? જો કુછ ઉસ (યા'ની અલ્લાહ (عَزَّ وَجَلَّ) ને તકદીર મેં લિખ દિયા હૈ વોહી હોતા હૈ, ક્યૂંકે કુરઆને પાક સે સાબિત હો રહા હૈ કે બિલા હુકમ ઉસ કે એક ઝર્ઝા નહીં હિલતા ફિર બન્દે ને કૌન સા અપને ઈખ્તિયાર સે વોહ કામ ક્રિયા જો દોઝખી હુવા યા કાફિર યા ફાસિક. જો બુરે કામ તકદીર મેં લિખે હોંગે તો બુરે કામ કરેગા ઔર ભલે લિખેં હોંગે તો ભલે. બહર હાલ તકદીર કા તાબેઅ હૈ ફિર ક્યૂં ઈસ કો મુજરિમ બનાયા જાતા હૈ ? ચોરી કરના, ઝિના કરના, કતલ કરના વગૈરા વગૈરા જો બન્દે કી તકદીર મેં લિખ દિયે હેં વોહી કરના હૈ, ઐસે હી નેક કામ કરના હૈ. અલ જવાબ : “ઝેદ ગુમરાહ બે દીન હૈ, ઉસે કોઈ જૂતા મારે તો ક્યૂં નારાઝ હોતા હૈ ? યેહ ભી તો તકદીર મેં થા. ઈસ કા કોઈ માલ દબાએ તો ક્યૂં બિગડતા હૈ ? યેહ ભી તકદીર મેં થા, યેહ શૈતાની ફે'લોં કા ધોકા હૈ કે જૈસા લિખ દિયા ઐસા હમેં કરના પડતા હૈ (હાલાંકે હરગિઝ ઐસા નહીં) બલકે જૈસા હમ કરને વાલે થે ઉસ (યા'ની અલ્લાહ (عَزَّ وَجَلَّ) ને અપને ઈલ્મ સે જાન કર વોહી લિખા હૈ.”

સદરુશરીઅહ, બદરુત્તરીકહ હઝરતે અલ્લામા મૌલાના મુફ્તી મુહમ્મદ અમજદ અલી આ'ઝમી عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْوَعْدَى મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ બહારે શરીઅત હિસ્સએ અવ્વલ સફહા 24 પર ફરમાતે હેં : “બુરા કામ કર કે તકદીર કી તરફ નિસ્બત કરના ઔર મશિયતે ઈલાહી કે હવાલે કરના બહુત બુરી બાત હૈ, બલકે હુકમ યેહ હૈ કે જો અચ્છા કામ કરે ઉસે મિન જાનિબિલ્લાહ (યા'ની અલ્લાહ (عَزَّ وَجَلَّ) કી જાનિબ સે) કહે ઔર જો બુરાઈ સરઝદ હો ઉસ કો શામતે નફ્સ તસવ્વુર કરે.”

**इरमाजे मुखदा** عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَاسِعُ : मुज पर कसरत से दुउदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुउदे पाक पढेना तुम्हारे गुनाहों के लिये मङ्कित है. (मिन्हाज)

## तक़ीर के बारे में वस्वसे का ओक बेहतरीन धलाज

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 344 सङ्घात पर मुश्तमिल किताब, "मिन्हाजुल आबिदीन" सङ्घा 86 ता 87 पर हुज्जतुल ईस्लाम हजरते सय्यिदुना عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली ने जो कुछ बयान इरमाया उस का फुलासा है : ईप्लीस बसा अवकात वस्वसे डाल कर यूं भी गुमराह करता है के ईन्सान के नेक व बढ होने के मु-तअद्विक रोजे अजल में ईसला हो युका है, जो उस रोज बुरों में हो गया वोह "बुरा" ही रहेगा और जो अख़ों में हो गया वोह "अख़ा" ही रहेगा. तुम्हारे आ'माले नेक व बढ से ईसलअे अ-जली में हरगिज ईर्क नहीं आ सकता. अगर **अल्लाह** तआला बन्दे को ईस वस्वसअे शैतान से बया ले और बन्दा ईप्लीसे लईन को यूं जवाब दे के "मैं तो **अल्लाह** तआला का बन्दा हूं और बन्दे का काम है अपने मौला के हुक्म की ता'मील, और **अल्लाह** तआला यूंके रब्बुल आ-लमीन है ईस लिये जो याहे हुक्म दे और जो याहे करे और इर ईबाहत व ताअत किसी तरह भी मुजिर (या'नी नुकसान देह) नहीं, क्यूंके अगर मैं ईल्मे ईलाही में सईद (या'नी सआहत मन्द) हूं तो इर भी और जियादा सवाब का मोहताज हूं और अगर مَعَادًا ईल्मे ईलाही में मेरा नाम बढ बप्तों में लिखा हो तो भी नेक आ'माल करने से अपने ओपर येह मलामत तो नहीं कइंगा के मुझे **अल्लाह** तआला ताअत व ईबाहत न करने पर सजा देगा और कम अज कम येह तो है के ना इरमान बन कर जहन्नम में जाने की निस्बत मुतीअ (या'नी इरमां बरदार) बन कर जाना बेहतर है. लेकिन येह तो सब मद्दज अेहतिमालात (या'नी शुबुहात) हैं,

इरमा ने मुस्वडा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अक दुइद शरीफ पढता है अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) उस के दिये अक कीरात अज लिफता है और कीरात उइद पडाउ जितना है. (अल-बिर्)।

वरना उस का वा'दा हक है और उस का कलाम कत्अन सख्या है और अल्लाह तआला ने ज़ा ब ज़ा ताआत व धबादात की बज आ-वरी पर सवाबे जमील के वा'दे इरमा ने हैं. तो जो शप्स धमान व ताअत (या'नी धबादात) के साथ रब तआला के दरबार में हाजिर होगा, वोह हरगिज़ दोऊभ में न जायेगा बल्के अल्लाह तआला की मेहरबानी और आ'माले सादिहा (या'नी नेकियों) की वजह से जन्नतुल फिरदौस में ٱللّٰهُمَّ اِنِّى جَاحِلٌ بِمَا اَعْمَلُ लेकिन हकीकत में येह दुभूल (या'नी दाबिला) भी वा'दने भुदा वन्दी की वजह से होगा. धसी सिद्धे वा'दा (या'नी सख्ये वा'दे) का धजहार करने के दिये अल्लाह तआला ने कुरआने मज्द (पारह 24 सू-रतुज्जुमर की आयत नम्बर 74) में सधद (या'नी सआदात मन्द्) लोगों के धस भकूले (या'नी कौल) को नकल इरमाया है :

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي  
तर-ज-भने कन्जुल धमान : और वोह  
कहेंगे : सब भूबियां अल्लाह को जिस  
صَدَقْنَا وَعَدَاةً (प २६, अल-अमर: १६)

अल्लाह की रहमत से तो जन्नत ही मिलेगी

औ काश ! महल्ले में जगह उन के मिली हो (वसाधले बग्गिश, स. 107)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
धमानियात के बारे में वस्वसे

भीठे भीठे धस्वामी भाधयो ! बसा अवकात शैतान अैसे अैसे वस्वसे डालता है के जिन को ज़बान से बयान करने की हिम्मत ही नहीं होती. यूँके सहाभने किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ अल्लाह व रसूल (عَزَّوَجَلَّ) की धताअत में हर दम भशगूल रहते थे,

**इरमाबे मुस्तफा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुर्रद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरशते उस के लिये ईस्तिगफार करते रहेंगे. (मुरान)

ईस लिये शैतान उन्हें वस्वसों के जरीअे भूष परेशान किया करता था. युनान्थे मुस्लिम शरीफ में है के कुछ सहाबअे किरामِ الرَّضْوَانِ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ मदीने के ताजदार, बे कसों के मद्दगार وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दरबारे गोहर बार में छाजिर हो कर अर्ज गुजार हुअे : हम अपने दिलों में जैसे भयालात (वस्वसे) महसूस करते हैं के ईन्हें भयान करना बहुत बुरा मा'लूम होता है. छादिये राहे नजात, सरवरे काअेनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद इरमाया : क्या तुम ने येह बात पाई है ? अर्ज किया : ओ हां. इरमाया : “येह फुला हुवा ईमान है.”

(صحيح مسلم ص ٨٠ حديث ١٣٢)

## जतरनाक वस्वसे

अहुरो बर के बादशाह, दो आलम के शहन्शाह, उम्मत के पैर प्वाह, बीबी आमिना के महरो माह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की भिदमते अकदस में छाजिर हो कर अेक शप्स ने अर्ज की : मैं अपने दिल में जैसे भयालात महसूस करता हूं के वोह बोलने से जल कर कोअेला हो जाना क्रियादा पसन्द है. इरमाया : अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ का शुक्र है के जिस ने ईन भयालात को वस्वसा बना दिया. (السُّنَّةُ لِابِي عَاصِمٍ ص ١٥٧ حديث ٦٧٠)

मुइस्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुइती अहमद यार भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّانُ इरमाते हैं : या'नी रब عَزَّ وَجَلَّ ने जैसे भयालात को वस्वसे में दाखिल इरमाया, जिन पर कोई पकड न रभी, वोह करीम बन्दे की मजबूरी व मा'जूरी जानता है. (मिरआत, जि. 1 स. 86)

## वस्वसे मुआइ हैं

हजरते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत इरमाते

**इरमाबे मुश्क** : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दूरेदे पाक पढा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रक्षमें भेजता है. (स्. १)

हैं के सरकारे अबद करार, शाईअे रोजे शुमार, बि ईज्ने परवर्द गार द्रो<sup>2</sup> आलम के मालिको मुप्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाई इरमाया : यकीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लिये मेरी उम्मत से इन के दिल्दी भतरात (या'नी वस्वसों) में दर गुजर इरमा दी, जब तक उस पर काम या कलाम न करें. (صحيح بخاری ج ۲ ص ۱۰۳ حدیث ۲۰۲۸)

**मुस्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत** उजरते मुस्ती अडमद यार भान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ईस उदीसे पाक के तद्दत इरमाते हैं : बुरे भयालात पर पकड नहीं येह ईस उम्मत की भुसूसिय्यत है, पिछली उम्मतों में ईस पर (या'नी वस्वसे दिल् में जमाने या कस्दन लाने पर) ल्पी पकड थी. भयाल रहे के बुरे भयालात और हैं (और) बुरा ईरादा कुछ और, बुरे ईरादे पर पकड है हत्ता के ईरादअे कुफ़ "कुफ़" है.

(मिरआत, जि. अव्वल, स. 81)

## वस्वसे पर कब गिरिइत है

**मुडकिंके अलल ईत्लाक, भातिमुल मुडदिसीन,** उजरते अल्लामा शौभ अब्दुल उक मुडदिसे द्देडलवी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इरमाते हैं : जो बुरा भयाल दिल् में बे ईप्तियार व अयानक आ जाता है, उसे डाजिस कहते हैं, येह आनी झानी छोता है, आया और गया. येह पिछली उम्मतों पर ल्पी मुआफ़ था और उम को ल्पी मुआफ़ है, लेकिन जो दिल् में बाकी रह जाअे वोह उम पर मुआफ़ है, उन (उम्मतों) पर मुआफ़ न था. अगर ईस के साथ दिल् में लज़्जत और भुशी पैदा हो उसे उम्म कहते हैं, ईस पर ल्पी पकड नहीं और अगर साथ (ही) कर गुजरने का ईरादा ल्पी हो तो वोह अज़्म है, ईस की पकड है.

(أَشْفَعَةُ اللَّمَعَاتِ ج ۱ ص ۸۰)

ફરમાને મુસ્લકા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો શપ્સ મુઝ પર દુરુદ પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કો રાસ્તા ભૂલ ગયા. (ટીપ્પણ)

## વસ્વસોં સે ઈમાન નહીં જાતા

વસ્વસે યાહે જિતને હી આએં ઓર કિતને હી ખતરનાક હોં ઉન સે ઈમાન બરબાદ નહીં હોતા ! ઈમાનિયાત કે તઅલ્લુક સે વસ્વસે આને પર દિલ પરેશાન હોના ઈસ બાત કી અલામત હૈ કે દિલ ઈમાન પર મુત્મઈન હૈ. પારહ 14 સૂ-રતુન્નહૂલ આયત નમ્બર 106 મેં ઈશદિ બારી તઆલા હૈ :

وَقَلْبُهُ مُّطْمَئِنٌّ بِالْأَيَّانِ      તર-જ-મએ કન્ઝુલ ઈમાન : ઓર ઉસ  
કા દિલ ઈમાન પર જમા હુવા હો.

(પૃષ્ઠ ૧૦૬, النحل)

## વસ્વસોં કો બુરા સમઝના ઐન ઈમાન હૈ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! ઈમાન કે બારે મેં વસ્વસે આના તો કમાલે ઈમાન કી અલામત હૈ, ચોર ડાકૂ વહીં જાતે હેં જહાં દૌલત કી રેલપેલ હોતી હૈ, તો જહાં ઈમાન જિતના ઝિયાદા મઝબૂત હોગા, શૈતાન ઉસી કદર ઝિયાદા તંગ કરેગા. કિસી મુસલ્માન કા વસ્વસોં પર ઘબરાના, પરેશાન હોના, રો રો કર શૈતાન મરદૂદ સે અબ્લાહ کی پناહ તલબ કરના દર હકીકત કુવ્વતે ઈમાની કી નિશાની હૈ. મુફસ્સિરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હઝરતે મુફ્તી અહમદ યાર ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَمَّلَانِ ફરમાતે હેં : “વસ્વસોં કો બુરા સમઝના ઐન ઈમાન હૈ.”

(મિરઆતુલ મનાજ્જહ, જિ. 1, સ. 82)

ઈસ્તિકામત દીજિયે ઈસ્લામ પર      કીજિયે રહમત ઐ નાનાએ હુસૈન  
દિલ સે દુન્યા કી હવસ સબ દૂર હો      કીજિયે રહમત ઐ નાનાએ હુસૈન

**इस्मा'ले मुशवहा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढ़ा तबकीक वोह बद्र भुप्त हो गया. (उः११)

नज़्म, कब्रों उशर, मीजां उर जगल कीजिये रहमत ऐ नानाअे हुसैन

(वसा'ले बज्शिश, स. 93)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ

## ईबादात में वस्वसे

ईमानिय्यात की तरह “ईबादात” में बी शैतान वस्वसे डालता है और ईस मुआ-मले में वोह अकेला नहीं, उस के हमराह अेक मुनज़्जम जमाअत है. मुफ़्स्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत उजरते मुफ़्ती अहमद यार ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنُ इरमाते हैं : तुर्रियते शैतान (या'नी औलादे ईब्लीस) की मुप्तलिफ़ जमाअतें हैं, ईन के नाम और काम अलग अलग हैं, युनान्चे “वुजू” में बहकाने वाली जमाअत का नाम वल्हान है और “नमाज़” में वर-गलाने वाली जमाअत का नाम भिन्जब है. जैसे ही मस्जिदों में, बाजारों में, शराब खानों में ईस की अलग अलग झौं रहती हैं.

(भिरआत, जि. 1, स. 85)

## 9 शैतानों के नाम व काम

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1548 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, “इंजाने सुन्नत” सफ़हा 40 ता 41 पर है : अभीरुल मुअमिनीन उजरते सय्यिदुना उ-मरे फ़ा़्रुके आ'उम रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं के शैतान की औलाद नव हैं : (1) जलीतून (2) वसीन (3) लकूस (4) आ'वान (5) उफ़फ़ (6) मुर्ह (7) मुसव्वित (8) दासिम और (9) वल्हान ﴿1﴾ जलीतून

કરમાને મુસ્વકા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જિસ ને મુઝ પર એક બાર દુરૂદે પાક પઢા અલ્લાહ ઉસ પર દસ રહમતે બેજતા હૈ. (૫૮)

: બાઝારોં મેં મુકરર હૈ, ઓર વહાં અપના ઝન્ડા ગાડે રહતા હૈ ﴿2﴾  
 વસીન : ઈસ કી લોગોં કો ના ગહાની આફાત મેં મુબ્તલા કરને કી ડ્યૂટી હૈ ﴿3﴾ લક્સ : આતશ પરસ્તોં પર મુ-તઅય્યન (યા'ની મુકરર) હૈ ﴿4﴾ આ'વાન : હુકમરાનોં કે સાથ હોતા હૈ ﴿5﴾ હફફાફ : શરાબિયોં કે હમરાહ રહતા હૈ ﴿6﴾ મુરહ : ગાને બાજે, બજાને વાલોં પર મુકરર હૈ ﴿7﴾ મિસ્વત : અફવાહેં આમ કરને કી ઝિમ્મેદારી પર મામૂર હૈ, લોગોં કી ઝબાનોં પર અફવાહેં જારી કરવા દેતા હૈ, ઓર અસ્લ હકીકત સે લોગ બે ખબર રહતે હેં ﴿8﴾ દાસિમ : ઘરોં મેં ડ્યૂટી દેતા હૈ. અગર સાહિબે ખાના ઘર મેં દાખિલ હો કર ન સલામ કરે ઓર ન બિસ્મિલ્લાહ પઢ કર કદમ અન્દર રખે, તો યેહ ઉન ઘર વાલોં કો આપસ મેં લડવા દેતા હૈ, હત્તા કે મારપીટ બલ્કે તલાક યા ખુલ્અ તક નૌબત પહોંચ જાતી હૈ ﴿9﴾ વલ્હાન : વુઝૂ મેં “વસ્વસે” ડાલને કે લિયે મુકરર હૈ. (المَنْبِهَات ص ۹۳)

નફસો શૈતાન હો ગએ ગાલિબ

ઈન કે ચુંગલ સે તૂ છુડા યા રબ (વસાઈલે બખ્શિશ, સ. 51)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

મસાજિદ મેં વસ્વસે

વસ્વસે ડાલને કી શૈતાની તહરીક મસ્જિદોં કે અન્દર ખૂબ ઝોરોં પર હોતી હૈ, વહાં મૌજૂદ કઈ મુસલમાનોં કો દુન્યવી બાતોં મેં લગા દેતા હૈ, બા'ઝોં કો લડવા દેતા હૈ, બા'ઝ બડે બૂઠોં કો ગુસ્સા દિલવા કર શોર મચવા દેતા હૈ, معاذَ اللهِ બા'ઝોં કો બદ નિગાહી, બદ



**इरमाते मुस्वडा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुअ पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (طريق)

अप्लाडी, गीअत व युगली वगैरा वगैरा गुनाहों में इंसा देता है, जिन्हें गुनाहों में नहीं इंसा पाता उन्हें नेकियों की कमी में मुअतला कर देता है और इस का तो शायद डर अक को तजरिबा होगा. म-सलन दर्स व अयान का सिखिसला हो रहा है मगर मस्जिद में मौजूद होने के आ वुजूद आ'अ लोग शिकत से महइम दूर बैठे आ परवाही के साथ इंधर उंधर देअ रहे होते हैं. जो लोग मस्जिद में अजिर होने के आ वुजूद यादे इलाही से गाइल और इल्मी हडकों वगैरा से काहिल रहते हैं वोह इतावा र-अविथ्या शरीफ में अयान कर्द इस हदीसे पाक को गौर से पढ़ें : अउरते सय्यिहुना अबू हुइरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत इरमाते हैं के मक्की म-दनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इरमाते हैं के जब तुम में कोइ मस्जिद में होता है, शैतान आ कर उस के अदन पर हाथ इैरता है, जैसे तुम में कोइ अपने घोडे को राम (या'नी इरमां अरदार व मुतीअ) करने के लिये उस पर हाथ इैरता है. पस अगर वोह शप्स ठहरा रहा (या'नी उस के वस्वसे से इौरन अलग न हो गया) तो उसे आंध लेता या लगाम दे देता है. अउरते सय्यिहुना अबू हुइरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं के (इस) हदीस की तस्दीक तुम अपनी आंभों से देअ रहे हो, वोह जो अंधा हुवा है उसे तुम देभोगे यूं लुका हुवा के जिंके इलाही नहीं करता और वोह जो लगाम दिया हुवा है वोह मुंह भोले है **अल्लाह** तआला का जिंक नहीं करता. [مسند الإمام أحمد، حديث ٨٣٧٨]

(इतावा र-अविथ्या मुअर्रजा, जिहद अव्वल, स. 771 ता 772)

गन्दे गन्दे वसाविस आते हैं

भरे दिल से इन्हें निकाल आका (वसाइले अफिशिश, स. 209)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**इरमाने मुश्कल** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दृढ़ पाक न पड़ा तबकीक वो हबद भुप्त हो गया. (उरुदा)

## गुस्ल में वस्वसे

गुस्ल में भी शैतान शक पैदा करता है, म-सलन कत्नी वस्वसा आता है के शायद पीठ सूभी रह गઈ, शायद सर के बाल सहीह तरह नहीं धुले, कुलां उजूव भुश्क रह गया है वगैरा. छावांके अैसा नहीं होता, अगर उस हिस्से को मल कर अच्छी तरह धो लिया है तो शक में पडने की जरूरत नहीं.

## गुस्ल में वस्वसे आने का अेक सलल

याद रहे के गुस्ल जाने में पेशाब करने से वस्वसे पैदा होते हैं, लिहाजा इस से बचा जाये, जैसा के सरकारे वाला तबार, उम बे कसों के मददगार, शफीअे रोजे शुमार, दो आलम के मालिको मुप्तार, उबीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एशाद इरमाया : “कोई गुस्ल जाने में हरगिज पेशाब न करे फिर उस में नहाये या वुजू करेगा, क्यूंके आम वस्वसे इसी से होते हैं.” (सुन्न अबुदावुद ज १ व ६६: ६६ हदित २७)

## हदीसे पाक की शर्ह

दा'वते इस्लामी के एशाअती एदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 308 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “इस्लामी बहनों की नमाज (ह-नफी)” सफ़हा 201 ता 202 पर है, मुफ़स्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत उजरते मुफ़ती अहमद यार जान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ इस हदीसे पाक के तहूत इरमाते हैं : अगर गुस्ल जाने की जमीन पुप्ता (या'नी पक्की) हो और उस में पानी पारिज होने की नाली भी हो

**इरमाते गुस्लहा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस भरतबा सुब्ब और दस भरतबा शाम  
दुइ दे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शकाअत मिलेगी. (अर्रुआत)

(और इर्शा का ढलवान या'नी slope भी सहीह हो के पेशाब वगैरा सीधा नाली में जायेगा) तो (अैसी सूरत में) वहां (छींटों वगैरा से फुद को बचाते हुअे) पेशाब करने में हरज नहीं अगर्ये बेहतर है के न करे, लेकिन अगर जमीन कय्यी (या ना हमवार) हो और पानी निकलने का रास्ता भी न हो तो पेशाब करना सप्त बुरा है के जमीन नजिस हो जायेगी, और गुस्ल या वुजू में गन्दा पानी जिस्म पर पड़ेगा. यहां दूसरी सूरत ही मुराद है इस लिये ताकीदी मुमा-न-अत इरमात गई. या'नी इस से वस्वसों और वल्म की बीमारी पैदा होती है जैसा के तजरिबा है या गन्दी छींटें पडने का वस्वसा रहेगा.

(मिरआत, जि.1, स. 266)

## वस्वसे की तबाहकारी की हिजायत

मेरे आका आ'ला हजरत, ईमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रजा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इतावा र-जविया जिह्द अव्वल सईहा 1043 जुल "ب" पर वस्वसे का बेहतरीन इलाज बयान करते हुअे इरमाते हैं : वस्वसे की न सुनना उस पर अमल न करना उस के षिलाई करना (भी वस्वसे का इलाज है). इस बलाअे अजीम (या'नी वस्वसे) की आदत है के जिस कदर इस (या'नी वस्वसे) पर अमल हो उसी कदर बढे और जब कस्दन उस का षिलाई किया जाये तो बि ईज्जिन्ही तआला थोडी मुदत में बिल्कुल दईअ हो जाये. (हजरते सय्यिदुना) अत्र बिन मुर्रुह عَنْهُ اللهُ تَعَالَى इरमाते हैं : "शैतान जिसे देभता है के मेरा वस्वसा उस में कारगर होता है सब से जियादा उसी के पीछे पडता है." (مصتّف ابن ابى شيبه ج ١ ص ٢٢٤)

**इरमाते मुश्क** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عمرारज़ان)

**ईमाम ईब्ने हजर मक्की** (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكُوفَى) अपने “इतावा” में इरमाते हैं के मुज से बा’ज सिका (या’नी काबिले अे’तिमाद) लोगों ने बयान किया के “दो वस्वसे वालों” को नहाने की जरूरत हुई, दरियाअे नील पर गअे, तुलूअे सुब्ह के बा’द पछोंअे, अेक ने दूसरे से कहा : तू उतर कर गोते लगा में गिनता जाउंगे और तुजे बताउंगे के पानी तेरे सारे सर को पछोंया या नहीं. वोह उतरा और गोते लगाना शुरुअ किये, और येह (या’नी जो बाहर है वोह) कह रहा है के अभी थोडी सी जगह तेरे सर में बाकी है, वहां पानी न पछोंया, अेक को सुब्ह से दो पहर हो गई, आपिर थक कर बाहर आया और दिल् में शक रहा के गुस्ल उतरा या नहीं ? फिर उस ने दूसरे से कहा के अब तू उतर में गिनूंगा. उस ने दुब्कियां लगाई और येह (पहला) कहता जाता है के अभी सारे सर को पानी न पछोंया, यहां तक के दो पहर से शाम हो गई, मजबूरन वोह (दूसरा) भी दरिया से निकल आया और दिल् में शुब्हे का शुब्हा ही रहा. दिन भर की नमाजें फोई, और गुस्ल उतरने पर यकीन न होना था और न हुवा. وَالْعِيَادُ لِلَّهِ تَعَالَى (या’नी : हम अल्लाह तआला की पनाह मांगते हैं) येह वस्वसा मानने का नतीजा था. (حديقۀ نديہ شرح طريقہ محمدیہ ج ۲ ص ۶۹۱)

मुजे वस्वसों से बया या ईलाही

पअे गौसो अहमद रजा या ईलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ  
**वुजू में वस्वसे**

वल्हान नामी शैतान, वुजू के बारे में मुफ्तलिफ़ वस्वसे

**इरमाने मुश्किल** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढेगा में कियामत के दिन उस की शफाअत करेगा. (अबुअल)

दिलाता है, म-सलन दौराने वुजू शक डालता है के हुलां उज्व धुलने से रह गया, हुलां उज्व तीन के बजाये दो बार धुला है, ईसी तरह बा वुजू शप्स को भी वस्वसा डालता है के तेरा वुजू टूट गया, वुजू किये हुअे धतना धतना वक्त गुजर चुका है अब वुजू कहां रहा होगा ! वगैरा वगैरा, ऐसी सूरत में शैतान के वस्वसे की तरफ बिल्कुल तवज्जोह नहीं देनी चाहिये. वुजू में वस्वसे डालने वाले शैतान के बारे में शह-शाहे मदीना, करारे कल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाईसो नुजूलै सकीना, ईज गन्जना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने बा करीना है : वुजू के लिये अेक शैतान है जिस का नाम “वल्खान” है, लिहाजा तुम पानी के वस्वसों से बयो.

(سُنَنِ ابْنِ مَاجَه ج ١ ص ٢٥٢ حديث ٤٢١)

## इमाली पर पानी छिडकना

अगर वुजू के बा'द कतरे का वल्म पडता रहता हो तो ईस वस्वसअे शैतानी से बयने का अेक तरीका येह भी हे के वुजू के बा'द अपने पाजामे या शलवार की इमाली (या'नी शर्मगाह के करीबी कपडे) पर पानी छिडक ले. हजरते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत इरमाते हैं के ताजदारै मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद इरमाया : जब तू वुजू करे तो छींटा दे ले. (इबन साजेह ज १ व २७० حديث ६१३) फिर अगर कतरे का वस्वसा हो तो भयाल कर लीजिये के पानी जो छिडका था येह उस का असर है. हां जिस को वाकेई कतरा आता है तो उस की बात जुदा है.

**वुजू में वस्वसा आये तो क्या करे ?**

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारै मक-त-अतुल मदीना की

**इरमाने मुस्ताहा** (عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) : मुज पर दुइदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (अल्बुही)

मत्बूआ 1250 सईहात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” जिह्ल अय्वल सईहा 310 पर सदरुशशरीअह, बहरुत्तरीकह हजरते अल्लामा मौलाना मुइती मुहम्मद अमजद अली आ’जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं : “अगर दरमियाने वुजू में किसी उजूव के धोने में शक वाकेअ हो और येह जिन्हगी का पहला वाकिया है तो उस को धो ले और अगर अकसर शक पडा करता है तो उस की तरफ इत्तिफात (या’नी तवज्जोह) न करे. यूहीं अगर बा’दे वुजू शक है के वुजू है या टूट गया तो वुजू करने की ईसे जइरत नहीं. हां कर लेना बेहतर है, जब के येह शुबा बतौरै वस्वसा न हुवा करता हो और अगर वस्वसा है तो उसे हरगिज न माने, ईस सूरत में अेइतियात समज कर वुजू करना अेइतियात नहीं बल्के शैताने लईन की ईताअत है.”

तू वुजू के वस्वसों से या भुदा मुज को भया  
साथ जहिर के मेरा बातिन भी हो जाये सई

### नमाज में वुजू टूटने के वस्वसे

नमाज में शैतान कभी वस्वसा डालता है के वुजू टूट गया, कभी पेशाब का कतरा निकलने तो कभी रीह पारिज होने का हिल में शुबा डालता है. युनान्हे ईस जिम्न में मेरे आकाअे ने’मत, आ’ला हजरत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, आशिके माहे नुबुय्वत, परवानअे शम्अे रिसालत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रजा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن यन्ह अहादीसे मुबा-रका नकल करने के बा’द ईशाह इरमाते हैं : ईन हदीसों का हासिल येह है के शैतान नमाज में धोका देने के लिये कभी ईन्सान की शर्मगाह पर आगे से थूक देता है के उसे कतरा आने का गुमान होता है, कभी पीछे झूंकता, या बाल भींयता है के

**इरमाने मुस्ताफा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पहुंचता है. (ط. 1)

रीह पारिज होने का पयाल गुजरता है. इस (तरह के वस्वसे आने) पर हुकम हुवा के नमाज से न फ़िरो, जब तक तरी या आवाज या भू न पाओ, जब तक वुकूअे उदस (या'नी वुजू टूटने) पर यकीन न हो ले. (इतावा २-अविख्या मुभर्रज, जि. 1, स. 774)

## शैतान से कह दीजिये : “तू भूटा है”

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! जब तक वुजू टूटने का औसा यकीन न हो के जिस पर कसम पाई जा सके उस वक्त तक वुजू नहीं जाता, शैतान जब कहे : तेरा वुजू जाता रहा तो दिल में जवाब दीजिये के **पभीस तू भूटा है और अपनी नमाज में मशगूल रहिये**, जैसे के उजरते सय्यिदुना अबू सईद जुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं के सरकारे वाला तभार, हम बे कसों के मददगार, शकीअे रोजे शुमार, दो आलम के मालिको मुप्तार, उबीअे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाई इरमाया : जब तुम में से किसी के पास शैतान आ कर वस्वसा डाले के तेरा वुजू जाता रहा तो फ़ौरन उसे दिल में जवाब दे के तू भूटा है. यहां तक के अपने कानों से आवाज न सुन ले या अपनी नाक से भू न सूंध ले. (الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ج ٤ ص ١٥٣ حديث ٢٦٥٦)

## मैं नाकिस मेरा अमल नाकिस

मेरे आका आ'ला उजरत ईमामे अहले सुन्नत मुजहिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह ईमाम अहमद रजा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَن फिरमाते हैं : “अगर फिर भी शैतान वस्वसा डाले के तूने येह अमल कामिल (या'नी पूरा) न किया, इस में हुलां नकस (या'नी औअ) रह

**इरमां मुश्क़ा** عَلَيَّ اللَّهُ تَعَالَىٰ وَالْبِرُّ سَلَمٌ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुःख पाक पढा **अल्लाह** بِرُّوَجَلٍ  
(उस पर सो रडमतें नाज़िल इरमाता है. (पु. 1))

गया तो शैतान से कड़ द्दे के अपनी दिलसोजी उठा रभे (या'नी शैतान अपनी हमददी अपने पास ही रभे, मुझे बताने की लाजत नहीं और मेरे लिये दिल जलाने की कोई जरूरत नहीं), मुझ से तो धतना ही हो सकता है, अगर (मेरा अमल) नाकिस है तो मैं भुद भी तो नाकिस हूं, अपने लाईक मैं बजा लाया, मेरा मौला **عَزَّ وَجَلَّ** करीम है. मेरे धजज व जो'इ (या'नी मेरी बे बसी और कमजोरी) पर रहुम इरमा कर धतना ही कबूल इरमा लेगा, उस की अ-उमत के लाईक कौन बजा ला सकता है ! अगर औसा करने से भी वस्वसा न टले तो कड़ द्दे के अगर तेरे कलने से मेरा पुजू न हुवा, मेरी नमाज (न हुई तो) न सही मगर मुझे तेरे भयाल के मुताबिक बे पुजू या जोहर की तीन रकुअत पढना गवारा है और **औ मदीन !** तेरी धताअत कबूल नहीं. जब यूं दिल में ठान ली तो वस्वसे की जउ कट जाओगी." और **بِعَوْنِهِ تَعَالَىٰ** (या'नी **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** की मदद से) दुश्मन (शैतान) जलीलो प्वार पसपा होगा." (मुलफ्फस अज इतावा र-उविथ्या मुपर्ज, जि. 1, स. 786, 787) उजरते सय्यिदुना धमाम मुजलिद **رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد** के इरमान का भी येही मतलब है के आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ** इरमाते हैं : मुझे बे पुजू नमाज पढ लेनी इस से जियादा पसन्द है के शैतान की धताअत कइं. (यहां लकीकत में बे पुजू नमाज पढना मुराद नहीं शैतान का वस्वसा दइअ करना मक्सूद है) (الطريقة المحمدية مع شرحه الحديقة الندية ج ٢ ص ٦٨٨)

## ज मैं बे पुजू ही नमाज पढ़ूंगा

सय्यिदुना धमामे आ'उम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** के उस्ताजुल उस्ताज, धमामे अजल धब्राहीम नफ्थ **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** इरमाते हैं : शैतान के वस्वसे पर अमल न करो, अगर वोह जियादा परेशान



**इस्माने मुस्लिम** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुर्इद शरीफ़ न पड़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (त्रिभुजा)

करे तो उस से कह दो : “मैं बे वुजू ही पढ़ूंगा तेरी न सुनूंगा.” यूं वोह ખબીस बाज आता है और उस की सुनो तो और जियादा परेशान करता है.

में तेरी इताअत करूं या इलाही

न शैतां की डरगिज सुनूं या इलाही

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

**नमाज में वस्वसे**

नमाज में ल्मी शैतान तंग करता और ध्यान बटाता रहता है. “मुस्लिम शरीफ़” की रिवायत है के डजरते सय्यिहुना उस्मान बिन अबिल आस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं के मैं ने अर्ज की : या रसूलव्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! शैतान मुज में और मेरी नमाज और तिलावत में डार्डल हो गया, नमाज मुशतबड (या'नी मश्कूक) कर दी. डुजुरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इशादि फ़रमाया : इस शैतान को बिन्जब कडा जाता है, जब कल्मी तुम इसे महसूस करो तो अव्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो और बाई तरफ़ तीन बार थुत्कार दो. युनान्ये मैं ने येही किया तो अव्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे डङ्अ फ़रमाया. (صحيح مُسْلِم ص ۱۲۰۹ حديث ۲۲۰۳)

**नमाज में आने वाले वस्वशों से बचने का तरीका**

मुफ़स्सिरे शहीर डकीमुल उम्मत डजरते मुफ़ती अडमद यार प्पान عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ الْخَتَّان मजकूरा डदीसे पाक के तहूत फ़रमाते हैं : नमाज शरूअ करते वक्त तकबीरे तहरीमा से कब्ल, तजरिबा है के

**करमान मुश्क़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुर्रुदे पाक न पड़े. (माम)

जो तहरीमा (या'नी नमाज शुरुअ करने) से पहले इस तरह (या'नी उलटी तरफ़ तीन बार) थुत्कार कर लाडौल शरीफ़ (या'नी لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ) पढ ले फिर तहरीमा करे (या'नी नमाज शुरुअ करे), दौराने नमाज में निगाह की हिफ़ाजत करे (वोह यूँ) के क्रियाम में सजदा गाह (या'नी सजदे की जगह) रुकूअ में पुशते कदम (या'नी पाउं के पन्जे की उपरी सतह), सजदे में नाक के बांसे (या'नी नाक की हडी पर), जल्सा (या'नी दो सजदों के दरमियान बैठने में) और का'दह (या'नी अतहिय्यात वगैरा पढने) में गोद में (नजर) रभे तो اللهُ تَعَالَى نमाज में हुजूरे (कल्ब या'नी जुशूअ व जुजूअ) नसीब होगा. (मिरआतुल मनाज्जिह, जि. 1, स. 89)

## थूक शैतान के मुंह में पड़ेगा

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! मिश्क़ात शरीफ़ के “बाबुल वस्वसा” में मुन्दरज (या'नी दर्ज कदा) अेक और हदीसे पाक के जिस में “इलाजे वस्वसा” के लिये बाई तरफ़ तीन बार थुत्कारने का तजक़िरा है, उस के तहत मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ખान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ इरमाते हैं : येह थूक शैतान के मुंह पर पड़ेगा, जिस से वोह जलील हो कर भागेगा क्यूंके शैतान अकसर बाई (या'नी उलटी) तरफ़ से आता है. इस से मा'लूम हुवा के कल्मी थूक से ल्मी शैतान भागता है. (मिरआत, जिह्द अव्वल, स. 88)

عَزَّ وَجَلَّ السَّامِعِ مَدِينَا غَفَّ عَنْكَ يَا بَارِئًا يَا تَجَرِّيبًا هَيْ كَيْ جَبَّ

इस्तिज़ा खाने में शैतान के वस्वसे आते हैं तो उलटे कन्धे की तरफ़

**ફરમાને મુસ્વાફ** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढा उस  
के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अहमद)

તીન બાર થુત્કાર દેને સે શૈતાન ઝલીલ હો કર ભાગતા હૈ. (ઈસ્તિન્જા  
ખાને મેં લાહૌલ શરીફ વગૈરા પઢના મન્ચ હૈ)

न वस्वसे आओं न मुजे गन्दे जयालात

कर जेहन का अद्लाह अता कुइले मदीना

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ  
**રફઅતોં કે બારે મેં વસ્વસે**

શૈતાન નમાઝ મેં વસ્વસે ડાલ કર ઉસ કી રફઅતોં મેં ભી શક  
પૈદા કર દેતા હૈ. હદીસે પાક મેં હૈ કે એક શખ્સ ને બારગાહે રિસાલત  
મેં હાઝિર હો કર વસ્વસે કી શિકાયત કી કે નમાઝ મેં પતા નહી  
ચલતા દો પઢીં યા તીન. હુઝૂર નબિય્હે કરીમ, રઊફુરહીમ  
عليه أفضل الصلوة والتسليم ને ઈશાદ ફરમાયા : જબ તૂ ઐસા પાએ તો અપની  
દાહની (યા'ની સીધી) અંગુશ્તે શહાદત (યા'ની શહાદત કી ઉંગલી)  
ઉઠા કર અપની બાઈ (યા'ની ઉલટી) રાન મેં માર ઔર બિસ્મિલ્લાહ  
કહ કે વોહ શૈતાન કે હક મેં છુરી હૈ. (الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ١ ص ٩٢ احديث ٥١٢)  
લિહાઝા જિસે નમાઝ મેં વસ્વસોં કી આદત હો ઉસે ચાહિયે કે નમાઝ  
શુરૂઅ કરને સે કબ્લ યેહ અમલ કર લે.

**રફઅતોં મેં શક કા મસ્અલા**

દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી  
મત્બૂઆ 1250 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ, “બહારે શરીઅત”  
જિલ્દ અવ્વલ સફહા 718 પર સદરુશશરીઅહ, બદરુતરીકહ હઝરતે  
અલ્લામા મૌલાના મુફ્તી મુહમ્મદ અમજદ અલી આ'ઝમી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي  
ફરમાતે હૈં : जिस को शुभारे रफ़अत में शक हो, म-सलन तीन<sup>3</sup> हुं

इरमाने मुस्तहब : صلى الله تعالى عليه و آله وسلم मुज पर दुरद शरीफ पढो **अल्लाह** توم पर रहमत  
(अबुयूय)

या यार<sup>4</sup> और बुलूग (या'नी बालिग होने) के बाद यह पहला वाकिया है तो सलाम हैर कर या कोई अमल मुनाफ़िये नमाज (या'नी जो नमाज से बाहर कर दे और है'ल) कर के तोड़ दे या गुमाने गालिब के ब मूजब पढ ले मगर बहर सूरत इस नमाज को सिरे से पढे. महुज तोड़ने की नियत काफ़ी नहीं. और अगर यह शक पहली बार नहीं बल्के पेशतर (या'नी इस से कबल) भी हो युका है तो अगर गुमाने गालिब किसी तरफ़ हो तो उस पर अमल करे वरना कम की ज़ानिब को इफ़्तियार करे, या'नी तीन और यार में शक हो तो तीन करार दे, दो और तीन में शक हो तो दो. وَعَلَى هَذَا الْقِيَاس (या'नी और इसी अन्दाजे के मुताबिक) और तीसरी यौथी दोनों में का'दह करे (या'नी अत्तहिय्यात में बैठे) के तीसरी<sup>3</sup> रक़अत का यौथी<sup>4</sup> होना मुह्तमल है (या'नी तीसरी के यौथी होने का इम्कान है) और यौथी में का'दे के बाद सज्दअे सइव कर के सलाम हैर दे. अलबत्ता गुमाने गालिब की सूरत में सज्दअे सइव नहीं.

### शैतान के लिये बाईसे मिलतो पवारी

मेरे आका आ'ला उजरत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इशाद इरमाते हैं :  
तीन<sup>3</sup> और यार<sup>4</sup> रक़अत में शक हो तो तीन करार दे कर अक रक़अत और पढ ले फिर सज्दअे सइव कर ले, अब अगर वाकेई इस की पांच<sup>5</sup> हुई तो यह दोनों सज्द गोया अक रक़अत के काईम हो कर उस की नमाज का दोगाना पूरा कर देंगे. अक रक़अत अकेली न रहेगी जो शरअन बातिल है बल्के इन सज्दों से मिल कर गोया अक नइल दोगाना जुदागाना हो जायेगा. अगर वाकेई यार हुई तो यह सज्द

**ફરમાને મુસ્તહા** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : મુઝ પર કસરત સે દુરુદ પાક પઢો બેશક તુમ્હારા મુઝ પર દુરુદ પાક પઢના તુમ્હારે ગનાહો કે લિયે મગ્કિરત હૈ. (મુસ્નદ)

શૈતાન કી ઝિલ્લતો ખ્વારી હોગે કે ઈસ ને શક ડાલ કર નમાઝ બાતિલ કરની ચાહી થી. (ફતાવા ર-ઝવિયા મુખર્રજ, જિ. 1, સ. 726)

## બુઝુર્ગ ને શૈતાન કો ના મુરાદ લોટા દિયા

એક બુઝુર્ગ કે પાસ નમાઝ કે બા'દ શૈતાન ને આ કર કહા : આપ ને યેહ નમાઝ સહીહ તરહ નહીં પઢી લિહાઝા ઈસે દોબારા પઢિયે. જવાબ દિયા : મેં હરગિઝ યેહ નમાઝ દોબારા નહીં પઢૂંગા ક્યૂંકે જૈસી મેં પઢ સકતા થા વૈસી મેં ને પઢ લી અગર ઈસ મેં કમી રહ ગઈ હૈ તો મેં અપને રબ جَزَاء سے ઈસ કી મુઆફી માંગ લૂંગા. શૈતાન ને કહા : નમાઝ જૈસી અઝીમ ઈબાદત કે મુઆ-મલે મેં સુસ્તી મત કીજિયે યેહ સુસ્તી કા મૌકઅ નહીં આપ દોબારા નમાઝ પઢ લીજિયે.

ફરમાયા : જો હોના થા વોહ હો ગયા મેં યેહ નમાઝ દોબારા કમી ભી નહીં પઢૂંગા. શૈતાન ને ફિર કહા : દેખિયે મેં આપ કી ભલાઈ કી ખાતિર નસીહત કર રહા હૂં મેં આપ કા ખૈર ખ્વાહ હૂં, **અલ્લાહ** جَزَاء કી બારગાહ મેં આપ કા મકામ વ મરતબા બહુત બુલન્દ હૈ નમાઝ એક અઝીમ ઈબાદત હૈ આપ જૈસે નેક બન્દે કો નમાઝ કે મુઆ-મલે મેં ઝિદ નહીં કરની ચાહિયે. બુઝુર્ગ ને શૈતાન કો ઝેર કરને કે લિયે કહા : ચાહે કુછ ભી હો જાએ મેં યેહ નમાઝ દોબારા નહીં પઢૂંગા, રહી બારગાહે ઈલાહી મેં બુલન્દ મરતબે વાલી બાત તો મેં ઈસ કી બારગાહ મેં બુલન્દી કે બજાએ પસ્તી હી પર ખુશ હૂં. શૈતાન ને કહા : **અલ્લાહ** તઆલા એસી નમાઝ કબૂલ હી નહીં ફરમાતા.

કહા : મેરા રબ બહુત કરીમ હૈ વોહ અપને કરમ સે મેરે ઈસ નાકિસ અમલ કો ભી કબૂલ ફરમા લેગા, જો મુઝ સે હો સકા વોહ મેં ને કર

**करमाने मुश्किल** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अक दुइद शरीफ़ पढता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये अक कीरात अज लिखता है और कीरात उहुद पडाड जितना है. (عمران)

लिया अब कबूल करना उस का काम है. अब तू यहाँ से दङ्ख लो  
ज, मैं तेरे वस्वसों में आ कर कभी भी इस नमाज को नहीं  
दोहराउंगा. बिल आभिर जब शैतान ने अपनी नाकामी देपी तो  
जलीलो प्वार लो कर वापस यला गया.

भयाल रहे ! धन बुजुर्ग की उसे सप्ती से रद करने से गरज  
येह थी के शैतान को जलील किया जाये, उस के वस्वसे को दङ्ख  
किया जाये और उस के रास्ते को बन्द किया जाये. येह गरज न थी के  
अमल ना दुरुस्त और ना मुकम्मल रहने दिया जाये और सुस्ती  
और ला परवाई को रवा रपा जाये और फ़रेबे नफ़स और क-रमे  
पुदा वन्दी के बडाने पर अ'तिमाद कर लिया जाये के जैसी तैसी  
गलत नमाज अदा की जाये इसी पर किफ़ायत कर ली जाये और  
दिल को तसल्ली देने के लिये येह कहा जाये के **अल्लाह** करीम है  
बाप्श देगा. (اشعرج 13)

## वस्वसे का अनोपा रद

अक बुजुर्ग को अक्सर येह वस्वसा आता के जहाँ मैं नमाज  
पढता हूँ वोह जगह नापाक है तो उन्हीं ने इस वस्वसे को इस तरह  
दूर किया के ज्ञान बूज कर वहाँ नमाज पढते जिस जगह की नापाकी  
का शक व शुभा लोता था. (اشعرج 13)

## वस्वसे की तरङ्क ध्यान ही मत करो

अक शागिर्द ता'लीम मुकम्मल करने के बा'द वतन लौटने  
लगा तो उस्ताजे मोहतरम ने पूछा : जब इबादत के दौरान शैतान  
वस्वसा डालता है तो क्या करते हो ? अर्ज की : उसे दूर करता हूँ.

**इरमाँ मुश्क** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुर्इदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिग्कार करते रहेंगे. (अ. ५)

पूछा : अगर फिर वस्वसा डाले तो ? जवाब दिया : उसे दोबारा दफ्अ करता हूं. तीसरी भरतबा दरयाफ्त किया : अगर सेहबारा (या'नी तीसरी<sup>3</sup> भरतबा) वस्वसा डाले तो ? कहा : तो भी उसे दूर करता हूं. उस्ताजे मोहतरम ने नसीहत इरमाँ : जब शैतान तुम्हें इबादत में वस्वसे डाले तो उस पर तवज्जोह न दो क्यूंके अगर तुम उस के वस्वसों को रोकने में लग गये तो वोह तुम्हें इसी काम में लगाये रखेगा बल्के तुम उस से “चरवाहे के कुत्ते” का सा सुलूक करो के उस की तरफ् ध्यान ही न करो और उस से **अल्लाह** तआला की पनाह मांगो. (या'नी **أَعُوذُ بِاللَّهِ** (पूरी) पढ लिया करो) (روح البیان ج ۱ ص ۶ بَتَصْرُف)

नमाओं में शैतां पलल डालता है

मुझे इस के शर से बचा या इलाही

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

**तहारत के बारे में वस्वसे**

शैतान तहारत के मुआ-मले में भी वस्वसे डालता और शुक्क व शुबुहात पैदा करता है के येह नापाक है, वोह नापाक है. आप वस्वसों की तरफ् तवज्जोह मत दीजिये, तहारत के मुआ-मले में शरीअते मुतद्दरा ने हमारे लिये बहुत जियादा आसानी रखी है, मगर इल्मे दीन की कमी की वजह से बा'अ लोग वस्वसों का शिकार हो जाते हैं. येह शर-ई मस्अला जेहन नशीन इरमा लीजिये के जब तक किसी शै का नापाक होना यकीनी तौर पर मा'लूम न हो जाओ इकत शक की बुन्याद पर उसे नापाक नहीं कह सकते बल्के

**इरमाबे मुश्तकी** : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर अक बार दुरदे पाक पढा **अल्लाह** उस पर दस रकमतें भेजता है. (स्)।

किसी चीज के नापाक होने की टोल में पडने की भी जरूरत नहीं।

## नजासत के बारे में तहकीक की हाजत नहीं

मेरे आका आ'ला हजरत, धामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह धाम अहमद रजा भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इतावा र-उविय्या जिल्ह 4 सङ्हा 515 पर नकल करते हैं : अमीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना उ-मरे इरुक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ओक डौज पर गुजरे (वोह डौज दह दर दह से छोटा था और ठहरे पानी के हुकम में था और ठहरे पानी में से अगर दरिन्दा पानी पी ले तो वोह नापाक हो जाता है) **अम्र** बिन आस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ (जो के) साथ थे. (वोह) डौज वाले से पूछने लगे : क्या तेरे डौज में दरिन्दे भी पानी पीते हैं? (अमीरुल मुअमिनीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने) इरमाया : “अै डौज वाले ! हमें न भता.”

(مَوْطَأُ اِمَامِ مَالِكِ ج ٤٨ رقم ٤٧)

## जानवरों के भूटे के मु-तअल्लिक म-दनी इल

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! नजासत की तहकीक में पडने की हाजत नहीं लावांके येह इम्कान होता है के डौज में दरिन्दे म-सलन कुते भी पानी पी लें और जो ठहरा या'नी दह दर दह से कम पानी कुत्ता जूटा कर दे वोह नापाक हो जाता है. मगर जिस को मा'लूम ही नहीं के दरिन्दे ने धस में से पानी पिया या नहीं उस के हक में वोह पानी पाक है. दा'वते इस्लामी के धशाअती धदारे मक-त-भतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सङ्हात पर मुश्तमिल किताब, “**बहारे शरीअत**” जिल्ह अव्वल सङ्हा 342 पर मस्अला नम्बर 10 है : “सुअर, कुत्ता, शेर, चीता, भेडिया, हाथी, गीदड



**हरमामे मुखडा** صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जो शप्स मुज पर दुरडे पाक पठना भूल गया वोड जन्त का रास्ता भूल गया. (प्रब)

और दूसरे दरिन्दों का जूटा नापाक है." जिनन "पञ्चतन पाक" के आठ छुड़के की निस्वत से जानवरों के जूटे से मु-तअद्विक मजीद 8 म-दनी कूल भी मुला-हजा कर लीजिये ان الله عليم خبير दुन्या व आभिरत का नङ्अ मिलेगा **१** जिन जानवरों का गोशत आया जता है यौपाओ हों या परिन्द उन का जूटा "पाक" है अगर्ये नर हों जैसे गाय, बैल, भेंस, बकरी, कबूतर, तीतर वगैरा **२** जो मुर्गी छूटी फिरती और गलीज (या'नी गन्दगी) पर मुंह डालती हो उस का जूटा मकड़ुड है और बन्द रहती हो तो पाक है **३** यूहीं बा'ज गाओं जिन की आदत गलीज (या'नी गन्दगी) आने की होती है उन का जूटा मकड़ुड है और अगर अभी नजसत पाई और उस के बा'द कोई ऐसी बात न पाई गई जिस से उस के मुंह की तहारत हो जाये और इस डालत में (अगर ठहरे या'नी दड दर दड से कम) पानी में मुंह डाल दिया तो नापाक हो गया. (और अगर जरी पानी में मुंह डाल कर पानी पिया तो मुंह पाक हो जायेगा) इसी तरह अगर बैल, भेंसे, बकरे नरों ने हस्बे आदत मादा का पेशाब सूंघा और उस से उन का मुंह नापाक हुवा और निगाह से गाईब न हुअे न इतनी देर गुजरी जिस में तहारत हो जाती तो उन का जूटा नापाक है और अगर चार (ठहरे) पानियों में मुंह डालें तो पहले तीन नापाक यौथा पाक **४** घोडे का जूटा पाक है **५** घर में रहने वाले जानवर जैसे बिल्ली, यूहा, सांप, छिपकली का जूटा मकड़ुड है **६** बिल्ली ने यूहा आया और झौरन भरतन में मुंह में डाल दिया तो नापाक हो गया और अगर जभान से मुंह याट लिया के भून का असर जता रहा तो नापाक नहीं **७** अस्थि पानी छोते हुअे मकड़ुड पानी से पुजू व

**इरमाते मुस्तक़ा** عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइडे पाक न पढा तहकीक वोह भद भप्त हो गया. (उरुः)

गुस्ल मक़्ज़ुह और अगर अय्श पानी मौजूद नहीं तो कोई हरज नहीं. इसी तरह मक़्ज़ुह जूटे का पाना पीना भी मालदार को मक़्ज़ुह है, गरीब मोहताज को बिला कराहत ज़र्छ **﴿8﴾** जिस का जूटा नापाक है उस का पसीना और लुआब भी **नापाक** है और जिस का जूटा पाक उस का पसीना और लुआब भी पाक और जिस का जूटा मक़्ज़ुह उस का लुआब और पसीना भी मक़्ज़ुह.

(बहारे शरीअत, जिल्द अक्वल, स. 342-344)

### कीयड के अरीअे वस्वसे का अजुब इलाज

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इतावा र-अविया जिल्द अक्वल सफ़्हा 771 पर इरमाते हैं : **सादिहीन** رَحْمَهُمُ اللَّهُ الْمُبِين (या'नी नेक बन्दों) में से अेक सादिब इरमाते हैं : मुझे दरबारअे तहारत (पाकी के बारे में) वस्वसा था. रास्ते की कीयड अगर कपडे में लग जाती तो उसे धोता. (हालांके जब तक यकीनी मा'लूमात न हो कीयड पाक होती है) अेक दिन नमाजे सुब्ह के लिये जा रहा था, राह की कीयड लग गई, मैं ने धोना याहा और ખयाल आया के धोता हूँ तो जमाअत जाती है, नागाह (या'नी अयानक) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे खिदायत इरमाई (और) मेरे दिल में डाला के इस कीयड में लौट और सब कपडे सान (या'नी कीयड आलूद कर) ले और यूँही (या'नी इसी हालत में) नमाज़ में शरीक हो जा. मैं ने अैसा ही किया, इर वस्वसा न हुवा. (الحديقة التّدية ج ٢ ص ٦٩٣)

**जब तक मा'लूम न हो कीयड पाक है**

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! येह इल्मे दीन

**इरमाने मुश्किल** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुर्रदे पाक पढा **اَللّٰهُمَّ** उस पर दस रकमतें भेजता है. (५)

की अ-र-कत है, उन बुजुर्ग को मस्जिदा मा'लूम है के रास्ते की कीयउ उस वक्त तक नजिस करार नहीं दी जा सकती जब तक उस का नापाक होना कर्ह (या'नी यकीनी) तौर पर मा'लूम न हो लिहाजा उन्हों ने वस्वसे का भूब धलाज इरमा लिया ! दा'वते इस्लामी के धशाअती धदारे मक-त-अतुल मदीना के मत्बूआ रिसाले, "कपडे पाक करने का तरीका" में है : रास्ते की कीयउ (याहे बारिश की हो या कोई और) पाक है जब तक उस का नजिस होना मा'लूम न हो, तो अगर पाउं या कपडे में लगी और बे धोअे नमाज पढ ली हो गध मगर धो लेना बेहतर है. (बहारे शरीअत, जिह्द अय्वल, स. 394)

### यादर का कौन सा कोना नापाक था येह याद न हो तो ?

कभी लिबास पर नजसत लग जाअे और पता न यले के कहां लगी थी तो भी आदमी वस्वसों का शिकार हो जाता है, अैसी सूरत में भी शरीअते मुतद्दर ने हमें बहुत आसानी दी है. युनान्हे इतावा र-अविय्या शरीफ में है के यादर का अेक गोशा (या'नी कोना) यकीनन नापाक था और ता'यीन याद न रहे (या'नी येह याद न हो के कौन सा कोना नापाक था) तो कोई सा कोना धोअे, पाकी का हुक्म देंगे. (इतावा र-अविय्या मुअर्रज, जि. 4, स. 511)

### अय्या पानी में हाथ डाल दे तो ?

भा'ज अवकात अय्या पानी में हाथ डाल देता है, तो आदमी शक में पउ जाता है के पानी पाक रहा या नापाक हो गया ! इस मुआ-मले में भी शक में पउने की जरूरत नहीं क्यूंके हु-कहाअे किराम (رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام) हुक्म देते हैं : "जिस पानी में अय्या हाथ या पाउं

**इरमा ने मुश्किल** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुरेदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (طريق)

डाल दे, पाक है जब तक नज्जसत की तहकीक न हो.”

(इतावा २-जविय्या मुभर्रज, जि. 4, स. 486)

तडारत के बारे में शैतान अकसर

दिलाता है शक, डो करम या ँलाडी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

**तलाक के बारे में वस्वसे**

भा'ज अवकात ँन्सान को शैतान वस्वसा डालता है के याद कर तेरे मुंड से अपनी बीवी के लिये तलाक के अल्फाज निकल गये थे ! ऐसी सूरत में जब के दल मुत्मंन है के तलाक नहीं दी, सिर्फ वस्वसा है तो शैतान को कड दीजिये तू जूटा है मैं ने तलाक नहीं दी. ँस जिन्न में मेरे आका आ'ला डजरत, ँमामे अडले सुन्नत, मौलाना शाह ँमाम अडमद रजा पान رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ ओक डिकायत नकल करते हुअे इरमाते हैं : ँमाम अबू डजिम अजिल्ला अ'म्मअे ताभि'न से हैं उन के पास ओक शप्स आ कर शाकी हुवा (या'नी शिकायत की) के शैतान मुजे वस्वसे में डालता है और सब से जियादा सप्त मुज पर येड गुजरता है के आ कर कडता है तूने अपनी औरत को तलाक दे दी. ँमाम ने डौरन इरमाया : क्या तूने मेरे पास आ कर मेरे सामने अपनी औरत को तलाक न दी ? वोह डभरा कर बोला : डुदा की कसम ! मैं ने कबी आप के पास उसे तलाक न दी. इरमाया : जिस तरड मेरे आगे कसम पा'ँ, शैतान से क्यूं नहीं कसम पा कर कडता के वोह तेरा पीछा छोडे. (या'नी जब ँतना अ'तिमाद है के मेरे सामने कसम पा सकता है तो ँसी अ'तिमाद के

**इस्माने मुश्कल** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरई पाक  
न पड़ा तहकीक वोह बद्द भप्त हो गया. (उद्दा)

साथ शैतान को भी कसम भा कर कह दे के ओ मरदूद ! दङ्गुओ हो, भुदा  
की कसम ! मैं ने अपनी औरत को तलाक नहीं दी.)

(इतावा र-जविथ्या मुभर्रज, जि. 1, स. 785)

परशानियां वस्वसों की भुदाया

तू कर दूर बहरे रजा या इलाही

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
**कोई भिलाओ तो तहकीक मत कीजिये**

भा'ज अवकात जाने की दा'वत के मौकअ पर भी इन्सान  
वस्वसे में पड जाता है के न जाने इस का जाना हलाल माल का है या  
हराम का ? इस बारे में हदीसे पाक में महुबूबे रब्बुल इबाद  
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशदि गिरामी है : जब तुम में से कोई अपने  
मुसल्मान भाई के यहां जाओ और वोह उसे अपने जाने में से भिलाओ  
तो भा ले और उस के बारे में सुवाल न करे और अगर वोह अपने मशरूब  
(पीने की चीज) से पिलाओ तो पी ले और उस के बारे में कुछ न पूछे.

(شُعْبَةُ الْإِيْمَانِ ج ٥ ص ٦٧ حديث ٥٨٠١)

**जाने के बारे में तहकीक से**

**गुनाहों का दरवाजा खुल सकता है**

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ कितनी आसानी है. काश ! हमें दीनी  
मा'लूमात होती के इल्मे दीन भी "वस्वसों" की जड काटने का जरीआ  
है. अइसोस ! हम दीन से ना वाकिफ़ियत की बिना पर भी अकसर  
शैतान के वस्वसों का शिकार हो जाते हैं. मेरे आका आ'ला हजरत

**इरमाते मुश्क** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस भरतबा सुब्ब और दस भरतबा शाम  
दुइदे पाक पढा उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्रात मिलेगी. (अ. ११३)

धमामे अहले सुन्नत मुजदिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह धमाम  
अहमद रजा पान رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इतावा २-जविय्या जिल्द 4 सफ़हा  
528 ता 529 पर इरमाते हैं : हुज्जतुल इस्लाम, हकीमुल उम्मद,  
काशिकुल गुम्मद धमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन  
मुहम्मद गजाली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने ओहयाउल उलूम शरीफ़ में इरमाया :  
में कहता हूं (जिस को दा'वत दी गई) उस के लिये जाईज नही के वोह  
उस (दा'वत) से सुवाल करे बल्के वोह तक्वा इज्तिहार करना याहता  
है तो नरमी के साथ छोड दे और अगर (दा'वत में) जाना जरूरी है  
तो पूछे बिगैर जाओ क्यूंके सुवाल करने में ईजा रसानी, पर्दा दरी  
और वइशत पैदा करना है और येह बिला शुबा हराम है. (धमाम  
गजाली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ आगे यल कर मजीद इरमाते हैं :) और कितने  
ही जाहिल जाहिद हैं जो तइतीश के जरीअे हिलों में वइशत पैदा  
करते हैं और निहायत सप्त और ईजा रसां कलाम इस्ति'माल  
करते हैं दर हकीकत शैतान उन की नजरों में ईसे अख्शा करार देता  
है ताके वोह हलाल पोर मशहूर हों, और अगर ईस का बाईस  
महज़ दीन हो तो फिर मुसल्मानों के हिल को अजिख्यत पछोंयाने का  
पौफ़ औसी यीज को पेट में दाबिल करने के पौफ़ से जियादा है जिस के  
भारे में वोह नही जानता क्यूंके जिस बात को वोह नही जानता उस  
पर मुवा-अजा (या'नी पूछगछ का मुआ-मला) नही होगी. जब के  
वहां औसी अलामत न हो जिस की वजह से इजतिनाब (या'नी  
बयना) लाजिम होता है. तो जान लो ! परहेज गारी तर्के सुवाल में  
है तजरसुस में नही और अगर जाना जरूरी हो तो जा ले और  
अख्शा गुमान करने में परहेज गारी है. (احياء العلوم ج ٢ ص ١٠٠)

**इरमाने मुश्किल** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दृष्ट शरीफ़ न पड़ा उस ने जफ़ा की. (عمرार بن) )

दिल पे शैतान ने आका है जमाया कब्जा हूँ गुनाहों में गरिफ़तार रसूले अ-रबी  
आह! बढ़ता ही यवा जाता है मरते ईस्यां दो शिफ़ा सय्यिदे अबरार रसूले अ-रबी

**صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ**  
**शैतान की दो किस्में**

येह तो था “शयातीनुल जिन्न” के वस्वसों का बयान. इसी तरह “शयातीनुल ईन्स” या’नी “शैतान आदमी” भी गुमराह करने की कोशिश करते और दिलों में शुक्क व शुबुहात डालते हैं. जैसा के मेरे आका आ’ला हज़रत, ईमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रज़ा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के इरमान का फुलासा है : शयातीन की दो किस्में हैं : (1) शयातीनुल जिन्न या’नी ईब्लीसे लईन और ईस की औलाद (2) शयातीनुल ईन्स या’नी कुफ़र व मुभ्तदिईन (या’नी बह मज़हबों) के दाई व मुनादी (या’नी कुफ़ व गुमराही की दा’वत देने वाले और ईस तरफ़ बुलाने वाले). मज़ीद इरमाते हैं : आईम्मअे दीन इरमाया करते के “शैतान आदमी, शैतान जिन्न से सप्त तर डोता है.”

(इतावा र-अविथ्या मुबर्रज़, जि. 1, स. 780, 781)

**اَللّٰهُمَّ** ने सू-रतुन्नास में ईन दोनों किस्म के शयातीन से पनाह मांगने का हुक्म दिया है. युनान्ये ईशादि बारी तआला है :

الَّذِي يُوسِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝  
तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : वोह जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालते हैं  
مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝  
जिन्न और आदमी.

इरमाओ मुस्ताफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीफ़ पढेगा में कियामत के दिन उस की शक्रात कड़ेगा. (अबुअल)

## शैतान आदमी

हदीसे पाक में भी है के हमारे ध्यारे आका मक्की म-दनी मुस्ताफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हजरते सय्यिदुना अबू उर गिज़ारी से एशदि इरमाया : अल्लाह एज़्ज़ व ज़्ज़ की पनाह मांग शैतान आदमियों और शैतान जिन्नों के शर से. अर्ज़ की : क्या आदमियों में भी शैतान हैं ? इरमाया : हां. (मुस्नदु इमाम अहमद ज ८ व १३० हदिथ २०१६)

युनान्ये जितने काफ़िर, मुशरिक, गुमराह, बह मजहब और गुस्ताभाने रसूल हैं वोह सभ के सभ शयातीनुल ईन्स (या'नी शैतान आदमियों) में दाखिल हैं और एब्लीस के साथ साथ उन के शर से भी हमें पनाह मांगते रहना चाहिये, मगर अइसोस ! अहुत से मुसल्मान ईन से भूब भेलजोब रहते हैं और उन की गुफ्त-गू भी भूब तवज्जोह से सुनते हैं. उन के मजहबी प्रोग्रामों में भी शरीक होते हैं, उन का लिट्रेयर भी पढते हैं, येही वजह है के इर अपने दीन से ना वाकिफ़ियत की बिना पर शक व शुब्हे में पड जाते हैं के आया वोह सहीह है या हम ? और इर बा'ज तो उन के जाल में ईस कदर ईस जाते हैं के उन्हीं के गुन गाने लगते हैं और यहां तक कहते सुनाई देते हैं के "येह भी तो सहीह कह रहे हैं !" मेरे आका आ'ला हजरत, एमामे अहले सुन्नत मुजहिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह एमाम अहमद रज़ा भान رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इतावा र-उविय्या जिल्द अव्वल सइहा 781 ता 782 पर अैसों से बयने की ताकीद करते हुअे इरमाते हैं : भाईयो ! तुम अपने नइअ नुक्सान को जियादा जानते हो या तुम्हारा रब एज़्ज़ व ज़्ज़ तुम्हारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ, उन का हुक्म तो येह है के शैतान तुम्हारे पास वस्वसा उालने आओ तो



**इरमाते मुसलहा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुरदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (अबुल)

सीधा जवाब येह दे दो के “तू जूटा है” न येह के तुम आप दौड दौड के उन (काफ़िरों या बे दीनों और बढ मजहबों) के पास जाओ और अपने रब **جَلَّ وَعَلَا** अपने कुरआन अपने नबी **وَسَلَّمَ** की शान में कलिमाते मल्लिना सुनो. (आ’ला हजरत आगे यल कर मजीद

इरमाते हैं :) (पारह 8 सू-रतुल अन्आम की आयत नम्बर 112 में ईशाद इरमाता है) **تَرَجَمَا : وَكُشَاءَ رَبِّكَ مَا فَعَلُوا فَذُرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ** ①

“और तेरा रब याहता तो वोह येह धोके बनावट की बातें न बनाते फिरते तो उन्हें उन के बोहतानों को यक लप्त छोड दे.” देओ उन्हें और उन की बातों को छोडने का हुकम इरमाया, या उन के पास सुनने के लिये दौडने का. और सुनिये इस के बा’द की (सू-रतुल अन्आम की) आयत

(113) में इरमाता है : **وَأَصْحَىٰ إِلَيْهِ أَقْدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۗ**

**لِيَرْصُدَهُ وَلِيَقْتَرِفُوا أَمَانَهُمْ مُّقْتَرُونَ** ② (तर-ज-मओ क-जुल ईमान : और

ईस लिये के उन के दिल् उस की तरफ़ कान लगाअें जिन्हें आभिरत पर ईमान नहीं और उसे पसन्द करें और जो कुछ नापाकियां वोह कर रहे हैं

येह ली करने लगे) देओ उन की बातों की तरफ़ कान लगाना उन का काम बताया जो आभिरत पर ईमान नहीं रभते और ईस का नतीजा

येह इरमाया के वोह मल्लिन बातें उन पर असर कर जाअें और येह ली उन जैसे हो जाअें **وَالْعِيَادُ بِاللَّهِ تَعَالَى** (या’नी और अल्लाह तआला की

ईस से पनाह). लोग अपनी जहालत से गुमान करते हैं के हम अपने दिल् से मुसल्मान हैं हम पर उन का क्या असर होगी ! हालां

के **رَسُولُ اللَّهِ** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इरमाते हैं : जो दज्जाल की ખबर सुने उस पर वाजिब है के उस से दूर भागे के ખुदा की कसम ! आदमी उस

के पास जाओगा और येह भयाल करेगा के मैं तो मुसल्मान हूं या’नी मुजे

**इरमाने मुश्किल** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुर्रद पढ़ो के तुम्हारा दुर्रद मुझ तक पहुँचता है. (طبرانی)

उस से क्या नुकसान पहुँचेगा वहाँ उस के धोको में पड़ कर उस का पैरू (या'नी पैरवी करने वाला) हो जायेगा. (अबुदौद ज ६ व १०७ अहदीथ ६३१९)

क्या दृष्टाल अक उसी दृष्टाल अफ्फस (या'नी नापाक तरीन दृष्टाल) को समजते हो जो आने वाला है, हाशा ! तमाम गुमराहों के दार्घ मुनादी (या'नी दार'वत देने वाले बुलाने वाले) सब दृष्टाल हैं और सब से दूर भागने ली का हुकम इरमाया और उस में येही अन्देशा बताया है. **रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** इरमाते हैं :

आभिर जमाने में दृष्टाल कज़्जाब (या'नी जूटे दृष्टाल) लोग होंगे के वोह भाते तुम्हारे पास लायेंगे जो न तुम ने सुनीं न तुम्हारे बाप दादा ने, तो उन से दूर रहो और उन्हें अपने से दूर रहो कहीं वोह तुम्हें गुमराह न कर दें, कहीं वोह तुम्हें कितने में न डाल दें. [अहदीथ ९ व १०७]

(इतावा र-जविय्या मुभर्रज, जि. 1, स. 781,782)

सरवरे दी ! लीजे अपने अपने ना तुवानों की भबर

नइसो शैतां सय्यिदा ! कब तक दबाते जायेंगे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

## वस्वसों का छलाख

### शैतान मेंडक की शकल में

उमर बिन अब्दुल अजीज رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

से मन्कूल है, किसी ने अब्बाह عَزَّوَجَلَّ से दूआ की : “या अब्बाह ! मुझे बनी आदम (या'नी आदमी) के दिल में शैतान के वसाविस डालने का तरीका दिखा दे.” उस ने ज्वाब में देखा के अक शीशे की

**इस्लामने मुश्वक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज़ पर दस भरतबा दुर्रहे पाक पढा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रडमते नालिद करमाता है. (طبرانی)

तरह का आदमी है, जिस के अन्दर बाहर सब आरपार नजर आ रहा है, उस के कांधे और कान के दरमियान शैतान मेंडक की शकल में बैठ कर अपनी तवील बारीक सूंड को कांधे से उस के दिल तक दाखिल किये वस्वसे डाल रहा है, जब जब वोह आदमी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का जिक्र करता है, शैतान पीछे हट जाता है. (مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ०९)

**सरकार का कोई लम्हा जिक्कुल्लाह से जाली न होता**

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! मा'लूम हुवा के जिक्कुल्लाह वस्वसों का बेहतरीन ईलाज है क्यूंके शैतान जिके ईलाही عَزَّوَجَلَّ से दूर भागता है, हमारे भीठे भीठे आका, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का कोई लम्हा कोई सांस जिक्कुल्लाह से जाली न जाता था, हमें जब जब मौकअ मिले बिदा ज़रूरत मुंड बन्द किये रहने के बजाये “**अल्लाह अल्लाह**” करते या दुर्रद शरीफ़ पढते रहना याहिये. اِنَّ شَآءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस तरह सवाब का “मीटर” चलता रहेगा. और शैतान भी कमजोर से कमजोर तर होता चला जायेगा.

(احياءُ العلوم ج ३ ص ३७)

**शैतान का पिघल कर थिडिया की तरह हो जाना**

हुज्जतुल ईस्लाम हजरते सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली اللهُ التَّوَالِي رَحْمَةً عَلَيْهِ وَرَحْمَةً اللهُ التَّوَالِي नकल करते हैं : हजरते सय्यिदुना कैस बिन हुज्जतुल ईस्लाम عَلَيْهِ رَحْمَةً اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ इस्लामते हैं : मेरे शैतान (हमजाद) ने मुज़ से कडा : मैं जब तुम्हारे अन्दर दाखिल हुवा तो ठोट की तरह (ताकत वर) था और अब थिडिया की तरह (कमजोर) हूं. मैं ने पूछा : क्यूं ? कडने लगा : तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जिक्र के

**हरमाने मुश्किल** : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरद शरीफ़ न पड़े तो वोह लोगों में से क-जूस तरीन शप्स है. (अहमद)

उरीअे मुजे पिघलाते रहते हो. (احياء العلوم ج 3 ص 37) भडर डाल याडे धलाडी से गइलत अखी थीऊ नही.

## शैतान पीछे हट जाता है

डउरते सय्यिदुना धंने अढ्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا इरमाते हैं : शैतान धंन्सान के दिल पर बैठा रहता है, जब भन्दा जिक्रुद्लाड से गाइल हो जाता है तो शैतान वस्वसे डालता है और जब धंन्सान **अल्लाह** का जिक्र करता है तो शैतान पीछे डट जाता है.

(مُصَنَّفُ ابْنِ أَبِي شَيْبَةَ ج 9 ص 392)

## जिक्र और वस्वसों के दरमियान जंग

डुजजतुल धस्लाम डउरते सय्यिदुना धंमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इरमाते हैं : डउरते सय्यिदुना मुजलिद رَحِمَةُ اللهِ الْوَاحِدُ ने धंस धंशादि षुदा वन्दी :

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ तर-ज-मअे कन्जुल धंमान : उस के शर से जो दिल में बुरे षतरे डाले और डुबुक रहे.

(प 30, النَّاس 4)

की तइसीर में इरमाया के वोह (शैतान) दिल पर छाया डुवा है जब धंन्सान **अल्लाह** तआला का जिक्र करता है तो वोह सुकड जाता है, जब गाइल होता है तो वोह उस के दिल पर डैल जाता है. तो **अल्लाह** तआला के जिक्र और शैतान के वस्वसे के दरमियान जंग धंसी तरड जारी है जिस तरड रोशनी और अंधेरे नीऊ रात और दिन के दरमियान लडाई जारी है येड दोनों या'नी जिक्र व वस्वसा अेक दूसरे के मुजालिफ़ हैं. **अल्लाह** तआला (पारड 28 सूअे मुजलिदलड आयत 19 में) धंशादि इरमाता है :

**इरमाने मुश्किल** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दूरे पाक न पड़े. (१)

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ  
فَاَنْسَمَهُمْ ذِكْرُ اللّٰهِ ط

तर-ज-मअे क-जुल धमान : उन पर शैतान गादिल आ गया तो उन्हें अद्लाड की याद भुला दी.

(احياء العلوم ج ۳ ص ۳۰)

## शैतान दिल् को कल लुकमा बनाता है

उरते सयिदुना अनस र्صى الله تعالى عنه इरमाते हैं, नबिये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाडे बनी आदम, रसूले मुदतशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने आलीशान है : शैतान धन्सान के दिल् पर अपनी सूंड रभ देता है, अगर वोह अद्लाड तआला का जिक्र करे तो वोह सुकड जाता है और अगर अद्लाड तआला को भूल जाअे तो उस के दिल् को लुकमा बना लेता है. (ابويعلى ج ۳ ص ۴۰۳ حديث ۲۸۵ ۴)

## 40 साल का आदमी अगर तौबा न करे तो....

म-कूल है : जब आदमी यालीस बरस का हो जाता है और तौबा नहीं करता तो शैतान उस के येडरे पर अपना हाथ डैरता है और कडता है : धस येडरे पर कुरबान जाउं जो इलाड नहीं पाअेगा.

(احياء العلوم ج ۳ ص ۳۰)

शडजादअे आ'ला उरते, ताजदारे अडले सुन्त, उरुरे मुहितये आ'जम बारगाडे धलाडी में अर्ज करते हैं :

जो हे गादिल तेरे जिक्र से जुल जवाल उस की गद्वलत हे उस पर वबालो नकाल<sup>1</sup>

का'रे गद्वलत<sup>2</sup> सेडम को भुदाया निकाल डम डों जाकिर<sup>3</sup> तेरे और मजकूर<sup>4</sup> तू

अद्लाडू अद्लाडू अद्लाडू अद्लाडू (सामाने बग्शिश)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

دينه

1 : और अजाब 2 : गद्वलत का गढा 3 : जिक्र करने वाला 4 : जिक्र किया गया

**ફરમાને મુશ્વકા** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोझे जुमुआ दो सो बार दुइदें पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अबुअयब)

## વસ્વસોં પર તવજજોહ મત દીજિયે

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! “વસ્વસોં” કા એક ઈલાજ યેહ ભી હૈ કે ઉસ કી તરફ સે તવજજોહ હટા દી જાએ. કાશ ! કે ઐસા હો જાયા કરે કે જૂં હી વસ્વસા આએ હમ તસવ્વુર હી તસવ્વુર મેં મક્કએ મુકર્રમા اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا કી હસીન વાદિયોં મેં ગુમ હો જાએ, મસ્જિદુલ હરામ શરીફ મેં હાઝિર હો કર ખૂબ ખૂબ હ-જરે અસ્વદ કો ચૂમને ઔર ઝૂમ ઝૂમ કર કા’બએ મુશરફા કે ગિર્દ ઘૂમને મેં મશગૂલ હો જાએ. કાશ ! કાશ ! કાશ ! મીઠે મદીને કી હસીન યાદોં મેં ખો જાએ, સોહને મોહને મદીને કે હસીન વ દિલકશ નઝ્ઝારોં મેં ગુમ હો જાએ, કભી મદીને કે દિલરુબા કાંટોં કે તો કભી વહાં કે ખુશનુમા ફૂલોં કે તસવ્વુર મેં ડૂબ જાએ. કભી મદીને કી ખૂબ સૂરત વાદિયોં કે તો કભી મદીને કી નૂરાની ગલિયોં કે હુસ્ન મેં મસ્ત હો જાએ. કભી મદીને કે દિલકુશા પહાડોં કી, તો કભી સહરાએ મદીના કી બહારોં કી યાદોં મેં ખુદ કો ગુમાએ, કભી મદીને કી પાકીઝા ફઝાઓં કા તો કભી મહકી મહકી હવાઓં કા તસવ્વુર હી તસવ્વુર મેં લુત્ફ ઉઠાએ. કભી સબ્ઝ સબ્ઝ ગુમ્બદ કે હસીન નઝ્ઝારોં કા તો કભી સુનહરી જાલિયોં પર બા અદબ હાઝિરી કા તસવ્વુર જમાએ ઔર અગર શૌક સાથ દે તો શહન્શાહે ખુશ ખિસાલ, પૈકરે હુસ્નો જમાલ, દાફેએ રન્જો મલાલ, સાહિબે જૂદો નવાલ, રસૂલે બે મિસાલ, બીબી આમિના رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا કે લાલ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા હસીન તસવ્વુર કર લિયા કરે. ઐ

इश्माले मुखलाह : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइद शरीक पढो अल्लाह عزوجل तुम पर रहमत भेजेगा. (अहमद)

काश ! हमें मदीने और मदीने वाले आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ऐसा गम, सोज, ईशक और दई मिल जाअे के दुन्या के गमों और सदमों नीज शैतानी वस्वसों से आजाद हो जाअें. औ काश !

ऐसा गुमा दे उन की विला में भुदा हमें

ढूंढा करें पर अपनी खबर को खबर न हो (उदाईके बश्शिश शरीफ)

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

## “या भुदा इश्म !” के आठ हुइइ की निरखत से वस्वसों के 8 इलाज

(1) अल्लाह عزوجل की तरफ रुजूअ कीजिये. (या'नी अल्लाह عزوجل की शैतान से नजात के लिये ईमदाद तलब कीजिये और त्रिकुल्लाह शुइअ कर दीजिये)

(2) أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ .

(3) لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ .

(4) सू-रतुन्नास की तिलावत कीजिये.

(5) كَذَيْتُ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ .

(6) هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۗ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٠﴾

(अहमद) कडिये. इन से इरन वस्वसा दइअ हो जाता है.

(7) سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْخَلْقِ، ﴿١٩﴾ إِنَّ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَوْمِ الْأَخِيرِ ۖ قُلِ الْيَوْمِ الْأَخِيرِ الَّذِي يَخْلُقُ جَدِيدًا ﴿٢٠﴾

**इरमाजे मुस्वका** (صلى الله تعالى عليه وآله وسلم): मुज पर कसरत से दुइदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुइदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये भक्तिरत है. (रायि)

की कसरत 'या'नी वस्वसे को जड से कत्म कर (या'नी काट) देती है. (मुलज्जस अज इतावा र-जविय्या मुजर्रज, जि. 1, स. 770) (ईस दुआ के हिस्सअे आयत को आप की मा'लूमात के लिये मुनक्कश खिलालैन और रस्मुल जत की तब्दीली के जरीअे वाजेह किया है)

(8) मुइस्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत मुइती अहमद यार पान रिहाई मुज को मिले काश! नइसो शैतां से तेरे उब्बीज का देता हूं वासिता या रब (वसाईलेबशिश, स. 54)

जो कोई सुब्ह शाम ईक्कीस ईक्कीस बार "लाइल शरीफ" पानी पर दम कर के पी लिया करे तो **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** वस्वसअे शैतानी से बहुत उद तक अम्न में रहेगा." (मिरआतुल मनाज्जह, जि. 1, स. 87)

अगर वस्वसे किसी सूरत न जायें तो.....

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

अगर वजाईई व आ'माल से शैतान के वस्वसों से छुटकारा न हो तो धबराने की जरूरत नहीं. दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ मिन्हाजुल आबिदीन में हुज्जतुल ईस्लाम उरते सय्यिदुना ईमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली **رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي** ने जो कुछ इरमाया उस का जुलासा है: अगर आप येह महसूस करें के शैतान, **أَبْلَاهُ** से पनाह मांगने के बा वुजूद पीछा नहीं छोड रहा और



**इरमा ने मुखाडा** عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अक दुइद शरीक पढता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये अक कीरात अज लिखता है और कीरात उहुद पडाऽ जितना है. (मुराज)

गालिब आने की कोशिश में है तो इस का मतलब ये है के **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को आप के मुजा-हदे, कुव्वत और सभ्र का धम्मिडान मतलूब है, या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ आजमा रहा है के आप शैतान से मुकाबला और मुहा-रबा (या'नी जंग) करते हैं या इस से मग्लूब हो (या'नी हार) जाते हैं. देखिये ना ! उस ने हम पर कुफ़्फ़ार वगैरा को भी तो मुसल्लत कर डी रबा है हावांके वोह इस पर यकीनन कादिर है के हमारे जिहाद वगैरा के बिगैर डी उन की शरारतों और क़ितनों को कुयल दे, लेकिन वोह औसा नहीं करता बल्के बन्दों को उन से जिहाद का हुकम इरमाता है, ताके आजमाओ के किस के दिल में जज्बओ जिहाद और शहादत की तडप है और कौन पूरे जुलूस और सभ्र से धन का मुकाबला करता है. आगे चल कर सय्यिदुना धमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي मज़ीद इरमाते हैं : तो इसी तरह शैतान के मुकाबले में भी हमें युस्ती और पूरी कोशिश का हुकम दिया गया है. फिर हमारे उ-लमाओ किराम (رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام) ने इरमाया है के शैतान से मुकाबला करने और इस पर काबू पाने के लिये तीन<sup>3</sup> चीजें जरूरी हैं **﴿1﴾** तुम उस के डीले और यालाकियां मा'लूम करो और पहचानो, जब इस का धम्म हो जाओगा तो फिर वोह तुम को नुक्सान नहीं पहुंचा सकेगा, जैसा के योर को जब पता चल जाओ के साहिबे मकान को मेरा धम्म हो गया है तो वोह भाग पडा होता है **﴿2﴾** तुम शैतान की गुमराह कुन और गुनाहों भरी दा'वत हरगिज मन्ज़ूर न करो, तुम्हारा दिल कत्अन उस की दा'वत का असर न ले नीज तुम उस के मुकाबले की

**इरमाबे मुश्फा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुर्रद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे. (प्र. १)

तरफ़ तवज्जोह भी न द्यो, क्यूंके इब्लीस अेक भौंकने वाले कुत्ते की मानिन्द है, अगर तुम उस को छोडोगे तो जियादा शोर मचायेगा और अगर अे'राज करोगे (या'नी उस के वस्वसों की तरफ़ तवज्जोह न द्योगे) तो वोह भी फामोश हो जायेगा ﴿3﴾ जिंके इलाही की कसरत करो.

(منهاج العابدین (عربی) ص ۶۷)

### भिक से शैतान की तकलीफ़ की कैफ़ियत

मन्कूल है : शैतान के लिये जिंकुल्लाह عَزَّوَجَلَّ इतना तकलीफ़ देह है जैसे के इन्सान के पडलू में आकिलह. (منهاج العابدین ص ६१) म-रजे आकिलह अेक अैसी बीमारी है जे इन्सान के गोशत पोस्त को मु-तअस्सिर करती है और जिस्म से गोशत फुद भफुद जुदा होना शुरुअ हो जाता है.

इम्निहां के कहां काबिल हूं मैं प्यारे अल्लाह

बे सबभ बप्श दे मौला तेरा क्या जाता है (वसाइले बप्शिश, स. 72)

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

वस्वसा : बारहा जिंकुल्लाह करने के बा वुजूद शैतान के वस्वसे नहीं जाते. म-सलन नमाज सब से बडा जिंक है लेकिन नमाज में तो बहुत जियादा वस्वसे आते हैं, यहां तक के भूली बातें भी शैतान याद दिला देता है !

वस्वसे का इलाज : बेशक जिंक से शैतान भागता है और यकीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुआ कबूल इरमाता है जैसा के कुरआने पाक सूअे मुअमिन आयत नम्बर 60 में इशाद होता है : **أَدْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ** तर-ज-मअे क-जुल इमान : “मुज से दुआ करो मैं कबूल करुंगा.” इस के बा वुजूद बारहा दुआ की कबूलियत के आसार

**इरमाते मुश्कल** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुर्रदे पाक पढा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रक्षमते भेजता है. (ط)

आहिर नहीं होते, तो मा'लूम हुवा के जिक्र के जरीअे शैतान को भगाने और दृआअे कबूल होने में कुछ शरायत भी हैं, जैसे के दवाओं का मुआ-मला है के परहेजी न करे तो दवा काम नहीं दिखाती म-सलन किसी को "शूगर" का मरज हो जाये, फिर भी मिठाईया भाये यला जाये तो दवा क्या करेगी ! लिहाजा जिक्र से वस्वसों से नजात पाने और शैतान को भगाने के लिये गुनाहों से परहेजी जरूरी है अगर तक्वा न अपनाया जाये तो जिक्र नुमा दवा का वस्वसों के मरज पर कार आमद होना दुश्वार है ! **हुज्जतुल ईस्लाम** हजरते सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली इरमाते हैं : शैतान भूके कुत्ते की भिस्ल है जो तुम्हारे करीब आता है अगर तुम्हारे और उस के दरमियान रोटी या गोश्त न हो तो धुत्कारने से ही यला जाता है या'नी मझ्ज आवाज ही से उसे भगाया जा सकता है और अगर तुम्हारे सामने गोश्त हो और वोह भूका भी हो तो वोह गोश्त पर जपटता है और मझ्ज जभानी धुत्कार से दूर नहीं होता. तो जो दिल शैतान की गिजा से ખाली हो उस दिल से जिक्र के जरीअे शैतान दूर हो जाता है, जब दिल पर शह्वत गालिब हो तो दिल का अन्दरूनी खिस्सा शैतान के काबू में डोगा और वोह उस वक्त किये जाने वाले जिक्रुल्लाह को दिल के ईर्द गिर्द झैला देगा. लेकिन जहां तक मुत्तकी लोगों के दिल का तअद्लुक है जो नफ्सानी ख्वाहिशत और बुरी सिफात से ખाली होते हैं उन पर शैतान, शह्वतों की वजह से नहीं आता बल्के गइलत की वजह से जिक्र से ખाली होने के बाईस आ जाता है जब वोह जिक्र की तरफ लौटते हैं तो वोह दूर हो जाता है. (مُلَخَّصٌ از اَحْيَاءِ الْعُلُومِ ج ۳ ص ۶۰)

**इरमाबे मुश्वहा** صلى الله تعالى عليه و آله و سلم : जो शप्स मुज पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

दिन गुनाहों में पडा रहे औसा शप्स तो गोया शैतान का दोस्त है और शैतान अपने दोस्तों के पास से धतनी आसानी से भागे औसा कहां है ! पारह 17 सूअे उज आयत नम्बर 4 में धशाद होता है :

तर-ज-मअे क-जुल धमान : जिस पर  
**كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَنْ تَوَلَّاهُ فَأَنَّهُ** लिख दिया गया है के जो उस की दोस्ती  
**يُضِلُّهُ وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ** करेगा तो येह जरूर उसे गुमराह कर  
**السَّعِيرِ** देगा और उसे अजाबे दोऊभ की राह  
 बतायेगा.

हुजहतुल धस्लाम डरते सय्यिदुना धमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली صلى الله عليه و آله و سلم इरमाते हैं : डकीकते जिंक दिल् में उसी वक्त जा गुजीं डोती है जब दिल् डो तक्वे के जरीअे आबाद किया जाअे नीज धस डो बुरी सिफात से पाक कर दिया जाअे वरना जिंक मडूज आने जाने वाली बात डोगी दिल् पर धस (या'नी जिंक) की सल्तनत और कब्जा नहीं डो सकता लिडजज वोड शैतान की हुकूमत डो दूर नहीं कर सकता. मजीद इरमाते हैं : अगर तुम शैतान से बयना याडते डो तो पडले तक्वे के जरीअे परडेज गारी धप्तियार करो इर जिंक की दवा धस्ति'माल करो यूं शैतान तुम से भाग जाअेगा.

(احياء العلوم ج 3 ص 45: 47)

**इरमाने मुखवाहा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक  
न पढा तलक़ीक़ वोह बद्र बप्त हो गया. (उर्र)

नइसो शैतान हो गअे गाविभ एन के युंगल से तू छुडा या रभ  
कर के तौबा में फिर गुनाहों में हो ही जता हूं मुप्तला या रभ  
नीम जं कर दिया गुनाहों ने  
मरजे इस्यां से हे शिडा या रभ

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

तालिबे गमे मदीना व

बकीअ व मग़ि़रत व

बे हिसाब जन्नतुल फिरदौस

में आका का पडोस



16 मुहर्रमुल हराम 1432 हि

### म-दनी इल

औ काश ! रोजी में कसरत की महब्बत से ज़ियादा  
हम नेकियों में ब-र-कत की हसरत करते और इस के  
लिये भी कोई विद करते.

इस्लाम मुसलमान : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : श्री शम्स मुन्ज पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोड जन्त का रिस्ता भूल गया. (طرائق)

## माخذ و مراجع

مطبوعه	کتاب	مطبوعه	کتاب
دارالکتب العلمیہ بیروت	کشف الخفاء	دارالکتب العلمیہ بیروت	تفسیر بغوی
دارالکتب العلمیہ بیروت	مشکا و المصابیح	کوئٹہ	روح البیان
دارالفکر بیروت	مرقاۃ المفاتیح	دارالکتب العلمیہ بیروت	صحیح بخاری
کوئٹہ	اشیخۃ المدعات	دار ابن حزم بیروت	صحیح مسلم
انجمن القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور	مراۃ المناجیح	دار احیاء التراث العربی بیروت	سفن ابوداؤد
پشاور	طریقہ محمدیہ حدیقہ ندیہ	دار المعرفہ بیروت	سفن ابن ماجہ
دار صادر بیروت	احیاء العلوم	دار احیاء التراث العربی بیروت	سنن ابویوسف
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	منہاج العابدین	دارالفکر بیروت	مصنف ابن ابی شیبہ
مکتبہ الاسلامی بیروت	فضل الصلاۃ و علی النبی	دارالفکر بیروت	مسند امام احمد
رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور	فتاویٰ رضویہ	دار المعرفہ بیروت	موطا امام مالک
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	دارالفکر بیروت	صحیح الترمذی
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	ملفوظات علی حضرت	دارالکتب العلمیہ بیروت	الاحسان تہ تیہ صحیح ابن حبان

## येह रिखावा पह ङर दूखरे की हे दीगिये

शादी गमी की तकरीबात, ँजतिमाआत, आ'रास और जुलूसे भीलाद वगैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाअेअ कदा रसाँल और म-दनी कूलों पर मुशतमिल पेक्लेट तकसीम कर के सवाब कमाँये, गाडकों को ब निच्यते सवाब तोडके में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाँल रअने का मा'मूल बनाँये, अण्भार इरोशों या बख्यों के जरीअे अपने मडल्ले के घर घर में माडाना कम अज कम अेक अदद सुन्नतों लरा रिसावा या म-दनी कूलों का पेक्लेट पडलोंया कर नेकी की दा'वत की धूमें मयाँये और भूब सवाब कमाँये.

ईडरिस

उन्वान	संखुड	उन्वान	संखुड
हुआअे कुनूत के बा'द हुडुड शरीफ पढना बेडतर	1	तकडीर के बारे में वस्वसे का अेक	
वस्वसे के लकडी मा'ना	1	बेडतररीन ँलाज	15
डर अेक के साथ अेक क्कुरिशा और अेक शैतान डोता डै	3	ईमानिय्यात के बारे में वस्वसे	16
डमआड डिकसे कडते डैं	4	अतरनाक वस्वसे	17
आका का डमआड मुसल्मान डो गया	4	वस्वसे मुआड डैं	17
सअ के साथ अेक शैतान डोता डै	5	वस्वसे पर कअ गिरिडत डै	18
शैतान डारिग डै तू मशगूल	5	वस्वसों से ईमान नडीं जता	19
शैतान बदन में भून डी तरड गडिश करता डै	6	वस्वसों को भुरा समअना अैन ईमान डै	19
डियाड भाने के 6 तशवीश नाक नुकसानात	6	ईबादात में वस्वसे	20
वस्वसों के जुडड जुडड अन्दाअ	8	9 शैतानों के नाम व काम	20
अदलाड اَلْحَرَامُ के बारे में वस्वसे	9	मसाजिड में वस्वसे	21
डर सुवाल का जवाअ नडीं डिया जता	9	गुस्ल में वस्वसे	23
वस्वसे का कुरआनी ँलाज	10	गुस्ल में वस्वसे आने का अेक सअअ	23
ईमाम राजी और शैतान	11	डडीसे पाक डी शर्ड	23
तकडीर के बारे में वस्वसे	12	वस्वसे डी तबाड डारी डी डिकायत	24
जो जैसा करने वाला था वैसा लिअ डिया गया	13	वुजू में वस्वसे	25
तकडीर के बारे में अेक अडम इतवा	13	डमाली पर पानी छिडकना	26

ઉન્વાન	સફલ	ઉન્વાન	સફલ
વુઝૂ મેં વસ્વસા આએ તો કયા કરે ?	26	ચાદર કા કૌન સા કોના ના પાક થા યેહ યાદ	40
નમાઝ મેં વુઝૂ ટૂટને કે વસ્વસે	27	બચ્યા પાની મેં હાથ ડાલ દે	40
શૈતાન સે કહ ઈજિયે : “તૂ ઝૂટા હૈ”	28	તલાક કે બારે મેં વસ્વસે	41
મેં નાકિસ મેરા અમલ નાકિસ	28	કોઈ ખિલાએ તો તહકીક મત કીજિયે	42
જા મેં બે વુઝૂ હી નમાઝ પઢૂંગા	29	ખાને કે બારે મેં તહકીક સે ગુનાહોં કા દરવાઝા પુઢાકા હૈ	42
નમાઝ મેં વસ્વસે	30	શૈતાન કી દો કિસ્મેં	44
નમાઝ મેં આને વાલે વસ્વસોં સે બચને કા તરીકા	30	શૈતાન આદમી	45
થૂક શૈતાન કે મુંહ મેં પડેગા	31	વસ્વસોં કા ઈલાજ	47
રક્તોં કે બારે મેં વસ્વસે	32	શૈતાન મેં ડક કી શકલ મેં	47
રક્તોં મેં શક કા મસ્અલા	32	સરકાર કા કોઈ લખ્દા ઝિકુલ્લાહ સે ખાલી હોતે	48
શૈતાન કે લિયે બાઈસે ઝિલ્લતો ખ્વારી	33	શૈતાન કા પિઘલ કર ચિડિયા કી તરફ જોગા	48
બુઝુર્ગને શૈતાન કો ના મુરાદ લૌટા દિયા	34	શૈતાન પીછે હટ જાતા હૈ	49
વસ્વસે કા અનોખા રદ	35	ઝિક ઔર વસ્વસોં કે દરમિયાન જોગા	49
વસ્વસે કી તરફ ધ્યાન હી મત કરો	35	શૈતાન દિલ કો કબ લુકમા બહોલતા હૈ	50
તહારત કે બારે મેં વસ્વસે	36	40 સાલ કા આદમી અગર તૌબા ન કરે તે	50
નજાસત કે બારે મેં તહકીક કી હાજત નહીં	37	વસ્વસોં પર તવજ્જોહ મત કીજિયે	51
જાનવરોં કે ઝૂટે કે મુતઅલ્લિક મ-દની ફૂલ	37	વસ્વસોં કે 8 ઈલાજ	52
કીચડ કે ઝરીએ વસ્વસે કા અજબ ઈલાજ	39	અગર વસ્વસે કિસી સૂરત ન જાએ તો	56
જબ તક મા'લૂમ ન હો કીચડ પાક હૈ	39	ઝિક સે શૈતાન કી તકલીફ કી કેહિયે	55



## ઝેહન મેં કુફિયા ખયાલાત આના

**સુવાલ :** ઉસ શખ્સ કે બારે મેં ક્યા હુકમ હૈ જો કહતા હૈ કે પરેશાની કે આલમ મેં મેરે ઝેહન મેં કુફિયા ખયાલાત આતે રહતે હૈં.

**જવાબ :** ઝેહન મેં કુફિયા ખયાલાત કા આના ઔર ઉન્હેં બયાન કરને કો બુરા સમજના ઐન ઈમાન કી અલામત હૈ ક્યૂંકે કુફિયા વસાવિસ શૈતાન કી તરફ સે હોતે હૈં ઔર વોહ લઈન મરદૂદ ચાહતા હૈ કે મુસલ્માન સે ઈમાન કી દૌલત છીન લે. નબિયે રહમત, શફીએ ઉમ્મત صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કી ખિદમતે સરાપા અ-ઝમત મેં બા'ઝ સહાબએ કિરામ عَلَيْهِمُ الرُّضْوَانُ ને હાઝિર હો કર અર્ઝ કી : હમેં ઐસે ખયાલાત આતે હૈં કે જિન્હેં બયાન કરના હમ બહુત બુરા સમજતે હૈં. સરકારે દો આલમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઈશાદિ ફરમાયા : ક્યા વાકેઈ ઐસા હોતા હૈ ? ઉન્હોં ને અર્ઝ કી : જી હાં. ઈશાદિ ફરમાયા : “યેહ તો ખાલિસ ઈમાન કી નિશાની હૈ.” (صحيح مسلم ص ٨٠ حديث ١٣٢)

સદરુશરીઅહ, બદરુતરીકહ હઝરતે અલ્લામા મૌલાના મુફતી મુહમ્મદ અમજદ અલી આ'ઝમી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ફરમાતે હૈં : “કુફી બાત કા દિલ મેં ખયાલ પૈદા હુવા ઔર ઝબાન સે બોલના બુરા જાનતા હૈ તો યેહ કુફ નહીં બલકે ખાસ ઈમાન કી અલામત હૈ કે દિલ મેં ઈમાન ન હોતા તો ઈસે બુરા ક્યૂં જાનતા.” (બહારે શરીઅત, જિલ્દ 2, હિસ્સા :

9, સ. 456, મક-ત-બતુલ મદીના બાબુલ મદીના કરાચી)

**સુવાલ :** અગર કિસી કે સામને તઝકિરા કિયા કે મુઝે ફુલાં ફુલાં કુફિયા વસ્વસે આતે હૈં, મેં ઈન સે તંગ હૂં, મુઝે કોઈ ઈલાજ બતાઈયે. ક્યા ઈસ સૂરત મેં ભી હુકમે કુફ હૈ ?

**જવાબ :** નહીં, ઈસ સૂરત મેં હુકમે કુફ નહીં.

(કુફિયા કલિમાત કે બારે મેં સુવાલ જવાબ, સ. 423, 424)